मूल्य : 20/-

पंजी. संख्या : 153/2016-17

वर्ष : २

जनवरी २०१८, विक्रमी सम्वत् २०७४
सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११८, दयानन्दाब्द १९४

अंक : १९

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म
वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु।
अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव
जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में
सदा सत्य का आचरण करें।

सुभाष चन्द्र बोस
(जन्म दिवस : 23 जन.)

लाला लाजपत राय
(जन्म दिवस : 28 जन.)

महात्मा गांधी
(स्मृति दिवस: 30 जन.)

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
(1824-1883)

आचार्य जयेन्द्र कुमार जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ पारायण का संचालन

ऋग्वेद पारायण यज्ञ में भाग लेते श्रद्धालुगण

यजमान आहूति प्रदान करते

ऋग्वेद पारायण यज्ञ में आहूति प्रदान करते यजमान

|| कृण्वन्तो विश्ववार्यम् ||

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
श्री रविन्द्र सेठ 'प्रधान'

प्रबंध संपादक
महामंत्री आर्य कै. अशोक गुलाटी

प्रधान संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

व्यवस्थापक
ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं प्रधान संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

Title Code : UPMU-200652

घोषणा पत्र संख्या : 153/06.06/2016-17

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : श्रद्धेय : स्वामी श्रद्धानन्दः	2
2.	आर्य धर्म और संस्कृति	3
3.	वेदों में मैत्री संदेश	4-5
4.	उपनिषद और धर्म	6-7
5.	हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे	8-9
6.	वेदाः महत्वम्	10-11
7.	फोटो फीचर	12-14
8.	अंग्रेजी लेख	16-17
9.	महर्षि दयानन्द और स्त्री शिक्षा	18-19
10.	स्वास्थ्य : आंवला	20
11.	आर्य समाज नोएडा का वार्षिकोत्सव	21-22
12.	आर्य समाचार	23

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। अपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731, 4206693, 9871798221

Web : www.aryasamajnoida.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

श्रद्धेयः स्वामी श्रद्धानन्दः

सम्पूर्णेऽस्मिन् आर्यजगति महर्षि दयानन्द सरस्वती

महाभागानां नाम्न पश्चात् येषां अभिधानम् सश्रद्धं अत्यधिक भावनया च जिह्वा उच्चार्यति येषां च नामश्रवणमात्रेण कर्णविवरौ श्रद्यापूर्येते एतादृशाः एवर्तेमहान्तः सन्यासिनः वर्तन्ते– **अमरहुता स्वामी श्रद्धानन्द महाभागाः**

स्वामिनां जीवनं उत्थान-पतनेन संयुक्तं संघर्षमयञ्चासीत्। तेषां जीवनम् अस्मभ्यं निरंतरं प्रेरणां प्रदाय नूतनोत्साहेन अभिषिञ्चति। अस्मांक जीवने पतनम् मुख्यं न अपितु मुख्यत्वेन वर्तते तस्मात् उन्नतिः। जन्मनः कश्चिद् श्रेष्ठः न भवति अपितु तस्य कर्मणा अस्माभिः ज्ञायते अयं श्रेष्ठः उत् वा न। स्वामिनां जीवनमेव अत्र प्रमाणम्। भूमिः एव न अपि निम्नस्तारात् उत्थाय जीवनम् आकाश इव श्लाघनीयं प्रशंसनीयञ्च च निर्मितवन्तः श्रद्धानन्द सरस्वती महाभागाः। स्वस्थ्य तपोमय जीवनेन, दृढ़संकल्पशक्त्या, सिद्धान्त निष्ठया, आर्यसमाजं प्रति समर्पण भावनया, पंथनिरपेक्षतया हिन्दुत्व वादितया शिष्य वत्सलतया च स्वजीवनम् सामान्य जनानाङ्कृते उच्चादर्शरूपेण प्रस्तुतवान्। वेदानां दिव्योपदेशं मनुर्भव (हे मनुष्याः स्वकर्मणा आचरणेन व्यवहारेण वा मनुष्याः भवन्तु इति) आत्मसात्कृतवान् आसीत् महानुभावोऽयम्।

स्वामिनः श्रद्धानन्दस्य बाल्यकाले बृहस्पति तथा च मुंशीराम रूपेण ख्यातिरासीत्। स्वनाम्नानुगुणमेव बृहस्पति यथा ज्ञानस्य देवः तथैवायमपि ज्ञानस्य प्रतिमूर्तिरासीत्। एतेषाम् जनकः आरक्षी आसीत् इत्यतः पठनम अतीव बाधितमभवत् किंतु स्वमेधया निष्ठया च लॉ इत्यतस्य परीक्षामुत्तीर्णवान्। बाल्यकाले मुंशीरामः अनेकेषां गुणाणां निधानमासीत्–आस्तिकता, परदुःखकातरता, पितृभक्ति सत्यवादिता इत्यादयः। रामायण-महाभारत, भारतीय दर्शनादिकमपि अत्यधिक प्रबलतया अधीते स्म। किंतु यौवनस्य प्रवेशद्वारे निसर्गतः एव दोषाणाम् प्रल्यमभवत् मद्यपानं-द्यूतक्रीड़ा आदि। किंतु यथा- निर्मल जलावगहेनन समेऽपि मलाः पवित्रीक्रियन्ते, हिमंस्य सन्निधौ एव आगत्य शीतस्य अनूभूतिः जायते। महर्षि दयानन्दस्य दर्शनेन तेषां प्रवचनेन सत्यार्थ प्रकाशस्य चाध्यनेन सर्वेपि दोषाः स्वयमेव अपगताः। बरेली नामके स्थाने पितुः आग्रहेण दयानन्द सरस्वती महात्मानाम् सकाशाद् गत्वा तार्किक प्रश्नोत्तर माध्यमेन श्रद्धानन्द महोदस्य जीवनस्य दिशा एव परिवर्तिता अभवत्। सः आर्यसमाजेन सह सम्बद्धः एव न अपितु इमं संगठनम् इतोऽपि दृढीकर्तुम्-कन्यापाठशालायाः, गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वारम्) अन्यच्च अनेकेषां गुरुकुलानां स्थापना गुरुकुलीय शिक्षा पद्धतेः विकासाय कृतवान्। स्वस्य निखिला अपि सम्पत्ति सर्वमेध यज्ञ इव गुरुकलेभ्यः समर्पितवान्।

1919 तमे खिस्ताब्दे सः कांग्रेसदलस्य सर्वमान्य नेतारूपेण लब्धप्रतिष्ठितोभवत्। रोलट एक्ट इत्येतस्य विरोधावसरे यया निर्भीकतया सः भुशुण्डिनां समक्ष स्वीयं वक्षस्थल कृतवान् तथा च विशालस्य जनांदोलनस्य नेतृत्व कृवान् तद् हिन्दूनां-मुस्मिम जनानां च मध्ये एकतायाः पर्यायः अभवत्। अप्रैलमास्य चतुर्दिनांके 1919 तमे खिस्ताब्दे प्रथमतया जामा मस्जिद इत्यस्य सिम्बर नामकात् स्थानात् पुनश्च फतेहपुर इत्यस्मात् यया उच्चगर्जनया वेदध्वनिम् उद्घोषयामास तद् मानवमात्रस्य कृते अनुकरणीयम आसीत्। हिन्दु महासभायां स्थितः सन् सः जनानां कल्याणं अनेकानि कार्याणि कृत्वान्- नारी शिक्षा, बाल विवाह, विधवा विवाह, दलितोद्धारः, अस्पृश्यतायाः निवारणम्, राष्ट्रभाषाया समर्थनम्। तेषां अयम् प्रयासः एव तस्य कृते मृत्युपाशोऽभवत्। अब्दुल रशीद नामकः धर्मान्ध युवकः 23 दिसम्बर 1926 क्रिस्ताब्दे भुशुण्डिकया हत्वा सम्पूर्णमपि भारतवर्षम् शोकसागरे निमग्नवान्। अद्य श्रद्धानन्द महोदयस्य बलिदान दिवसस्य अवसरे आर्यसमाजस्य कार्यान् वर्धापयित्वा तान् प्रति श्रद्धाकुसुमान समर्पयामः। तेषां कीर्तिः पताका अद्यापि अस्माकम् चेतस्सु प्रसरति। उक्तं च केनचित्- कीर्तिर्यस्य सः जीवति-

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

69वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
आर्य समाज, आर्य गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा द्वारा समस्त जनों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं - प्रबंध संपादक

आर्य धर्म और संस्कृति

आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ। आर्य धर्म प्राचीन आर्यों का धर्म और श्रेष्ठ धर्म दोनों समझे जाते हैं। प्राचीन आर्यों के धर्म में प्रथमत: प्राकृतिक देवमंडल की कल्पना है जो भारत में पाई जाती रही है। आर्यों का साम्राज्य समस्त विश्व में था। आर्यों के द्वारा समस्त देशों की व्यवस्थायें की जाती थी। ईरान, यूनान, रोम, जर्मनी आदि में आज भी आर्यों के वंश पाये जाते हैं। इसमें आकाश और पृथ्वी के बीच में अनेक देवताओं की सृष्टि हुई है।

आर्यों के मूल धर्म ग्रंथ ऋग्वेद में अभिव्यक्त है कि ईरान में बसे आर्य अवेस्ता में, यूनानियों का उलिसीज़ और ईलियद में। देवमंडल के साथ आर्य सिद्धांत का विकास हुआ जिसमें मंत्र, यज्ञ, अतिथि सत्कार आदि मुख्यत: सम्मिलित थे। आर्य आध्यात्मिक दर्शन (ब्रह्म, आत्मा, विश्व, मोक्ष आदि) और आर्य नीति का विकास भी समानांतर हुआ। शुद्ध नैतिक आधार पर अवलंबित परंपरा विरोधी अवैदिक संप्रदायों-बौद्ध, जैन आदि-ने भी अपने धर्म को आर्य धर्म अथवा सद्धर्म कहा। सामाजिक अर्थ में 'आर्य' का प्रयोग पहले संपूर्ण मानव के अर्थ में होता था। कभी-कभी इसका प्रयोग सामान्य जनता के लिए होता था। फिर अभिजात और श्रमिक वर्ग में अंतर दिखाने के लिए आर्य वर्ण और शूद्र वर्ण का प्रयोग होने लगा। फिर आर्यों ने अपनी सामाजिक व्यवस्था का आधार वर्ण को बनाया और समाज चार वर्णों में वृत्ति और श्रम के आधार पर विभक्त हुआ। ऋक्संहिता में चारों वर्णों की उत्पत्ति और कार्य का उल्लेख इस प्रकार है-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शूद्रोऽजायत॥

(इस विराट् पुरुष के मुंह से ब्राह्मण, बाहु से राजस्व (क्षत्रिय), ऊरु (जंघा) से वैश्य और पद (चरण) से शूद्र उत्पन्न हुआ)।

यह एक अलंकारिक वाक्य है। ब्रह्म तो अनंत है। उस ब्रह्म के सद् विचार, सद् प्रवृत्तियां, आस्तिकता जिस जनसमुदाय से अभिव्यक्त होती है उसे ब्राह्मण कहा गया है। शौर्य और तेज जिस जन समुदाय से अभिव्यक्त होता है वह क्षत्रिय वर्ग और इसके अतिरिक्त संसार को चलाने के लिए आवश्यक क्रियायें जैसे कृषि वाणिज्य, ब्रह्म, वैश्य भाग से अभिव्यक्त होती हैं। इसके अतिरिक्त भी अनेक कार्य बच जाते है जिनकी मानव जीवन में महत्ता बहुत अधिक होती है जेसे दस्तकारी, शिल्प, वस्त्र निर्माण, सेवा क्षेत्र, ब्रह्म अपने शूद्र वर्ग द्वारा अभिव्यक्त करता है।

आजकल की भाषा में यह वर्ग बौद्धिक, प्रशासकीय, व्यावसायिक तथा श्रमिक थे। मूल में इनमें तरलता थी। एक ही परिवार में कई वर्ण के लोग रहते और परस्पर विवाहादि संबंध और भोजन, पान आदि होते थे। क्रमशः यह वर्ग परस्पर वर्जनशील होते गये। यह सामाजिक विभाजन आर्यपरिवार की प्राय: सभी शाखाओं में पाए जाते हैं, यद्यपि इनके नामों और सामाजिक स्थिति में देशगत भेद मिलते हैं।

प्रारंभिक आर्य परिवार पितृसत्तात्मक था, यद्यपि आदित्य, दैव आदि शब्दों में मातृसत्ता की ध्वनि वर्तमान हैं। दंपती की कल्पना में पति-पत्नी का गृहस्थी के ऊपर समान अधिकार पाया जाता है। परिवार में पुत्रजन्म की कामना की जाती थी। दायित्व के कारण कन्या का जन्म परिवार को गंभीर बना देता था, किंतु उसकी उपेक्षा नहीं की जाती थी। घोषा, लोपामुद्रा, अपाला, विश्ववारा आदि स्त्रियां मंत्रद्रष्टा ऋषि पद को प्राप्त हुईं थीं। विवाह प्रायः युवावस्था में होता था। पति-पत्नी को परस्पर निर्वाचन का अधिकार था। विवाह धार्मिक कृत्यों के साथ संपन्न होता था, जो परवर्ती ब्रह्म विवाह से मिलता-जुलता था।

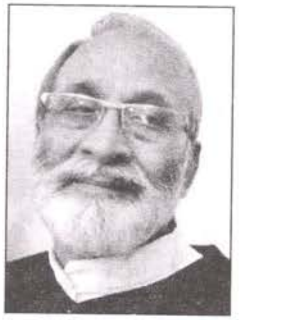

प्रबंध संपादक
महामंत्री आर्य कै. अशोक गुलाटी

प्रारंभिक आर्य परिवार पितृसत्तात्मक था, यद्यपि आदित्य, दैव आदि शब्दों में मातृसत्ता की ध्वनि वर्तमान है। दम्पत्ति की कल्पना में पति-पत्नी का गृहस्थी के ऊपर समान अधिकार पाया जाता है। परिवार में पुत्रजन्म की कामना की जाती थी। दायित्व के कारण कन्या का जन्म परिवार को गंभीर बना देता था, किंतु उसकी उपेक्षा नहीं की जाती थी

प्रारंभिक आर्य संस्कृति में विद्या, साहित्य और कला का ऊंचा स्थान है। भारोपीय भाषा ज्ञान के सशक्त माध्यम के रूप में विकसित हुई। इसमें काव्य, धर्म, दर्शन आदि विभिन्न शास्त्रों का उदय हुआ। आर्यों का प्राचीनतम साहित्य वेद भाषा, काव्य और चिंतन, सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। ऋग्वेद में ब्रह्मचर्य और शिक्षणपद्धति के उल्लेख पाए जाते हैं, जिनसे पता लगता है कि शिक्षण व्यवस्था का संगठन आरंभ हो गया था और मानव अभिव्यक्तियों ने शास्त्रीय रूप धारण करना शुरू कर दिया था।

वेदों में मैत्री संदेश

डा. मंजु नारंग, डी.लिट.

यद्भुत ज्ञान के भंडार वेद इस प्रकार के महासागर के तुल्य है, जिसमें ज्ञान की जिस पावनी भावना को प्राप्ति हेतु हम डुबकी लगाते हैं, हमकों उसी मनोभिलाषित ज्ञान रत्न की प्राप्ति हो जाया करती है। वेदों में मैत्री भावना के विषय में भी विवरण प्राप्त होता है। यजुर्वेद के ३६वें अध्याय के १८वें मंत्र में परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की गयी है कि-

दृते हँहं मा मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रास्याऽहं चक्षुषा सर्वाणभूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।

-यजुर्वेद ३६/१८

अर्थात् हे अविद्या रूपी तिम्रिर के विनाशक परमपिता परमेश्वर! समस्त प्राणी मुझको मित्र की दृष्टि से देखें। हे परमात्मन्! आप हमको इस प्रकार की दृढ़ता प्रदान कीजिए जिससे हम सभी एक दूसरे को मैत्री भाव से सम दृष्टि से देखें। यह मंत्र मानवीय मूल्यों का मूलाधार कहा जा सकता है। समस्त प्राणियों को स्वयं के प्रति तथा समस्त प्राणियों के प्रति स्वयं को मैत्री पूर्ण सम् दृष्टि समस्त प्रकार के विद्वेषों, मनोमालिन्य, राग, द्वेष, वैमनस्यपूर्ण व्यवहार को दूर करने का सर्वप्रमुख कारण कहा जा सकता है। इस मंत्र के मूल से- १. समीक्षन्ताम् २. समीक्षे तथा ३. समीक्षामहे ये तीन शब्द आये हैं। इन तीनों शब्दों में समीक्षा शब्द का प्रयोग सम दृष्टि से दर्शन करने के अतिरिक्त तथ्यों को मीमांसापरक दृष्टि से देखना भी है। जीवन में सभी के प्रति सम दृष्टि रखना तथा मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना परिष्कृत तथा उन्नत व्यक्तित्व का परिचायक होता है, किंतु मित्र का प्रत्येक स्थित में मित्र के लिए दृढ़ता पूर्वक खड़े रहना ही मित्रता की सच्ची कसौटी होती है।

'मिमिदा स्नेहने' धात से औणादिक 'क्त्र' प्रत्यय संयुक्त करने मे 'मित्र' शब्द की व्युत्पत्ति होती है। वास्तव में तो 'मित्र नामत्रायते इति मित्रः' अर्थात् जो कष्ट से रक्षा करता है, वही मित्र होता है। नीति साहित्यकार भर्तृहरि ने मित्र का लक्षण स्पष्ट किया है-

पापान्निवारयते योजयते हिताय, गुह्य च निगूहतिसुषान् प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षमिदं प्रवदन्तिसन्तः।

नीतिशतकम्- ७३

अर्थात् सच्चा मित्र अपने मित्र की पाप से रक्षा करता है। उसको हितप्रद कार्यों में नियुक्त करता है। गोपनीय तथ्यों को गुप्त रखता है। गुणों को प्रकट करता है। विपत्ति में साथ नहीं छोड़ता है। आवश्यकता पड़ने पर सहायता करता है। सज्जन व्यक्ति सच्चे मित्र के यही लक्षण बतलाते हैं। संस्कृत साहित्य के प्रबुद्ध विद्वान आचार्य विष्णु शर्मा ने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ पंचतंत्र के द्वितीय तंत्र मित्र सम्प्राप्ति में मित्रता के स्थायित्व हेतु आवश्यक तथ्वों की ओर 'ध्यान' आकृष्ट करवाया है-

ययोरेव समोवित्रं ययोरेव समं कुलम्।
तयोमैत्री विवाहश्च न तु पुष्ट विपुष्टयोः।

पंचतंत्र मित्र सम्प्राप्ति- २९

अर्थात् समान आर्थिक स्थिति तथा समान कुल वालों में ही मैत्री तथा विवाह संबंध स्थापित करना चाहिए, क्योंकि पुष्ट तथा विपुष्ट की मित्रता तथा वैवाहिक संबंध दृढ़ता को प्राप्त नहीं हो पाते हैं। सफल जीवन यापन तथा मैत्री निर्वहन को यही मूलभूत कुंजी हैं। मित्रता के बिना जीवन यापन दुष्कर

हे अविद्या रूपी तिमिर के विनाशक परमपिता परमेश्वर! समस्त प्राणी मुझको मित्र की दृष्टि से देखें। हे परमात्मन्! आप हमको इस प्रकार की दृढ़ता प्रदान कीजिए जिससे हम सभी एक दूसरे को मैत्री भाव से सम दृष्टि से देखें। यह मंत्र मानवीय मूल्यों का मूलाधार कहा जा सकता है। समस्त प्राणियों को स्वयं के प्रति तथा समस्त प्राणियों के प्रति स्वयं को मैत्री पूर्ण सम दृष्टि समस्त प्रकार के विद्वेषों, मनोमालिन्य, राग, द्वेष, वैमनस्यपूर्ण व्यवहार को दूर करने का सर्वप्रमुख कारण कहा जा सकता है। इस मंत्र के मूल से- 1. समीक्षन्ताम् 2. समीक्षे तथा 3. समीक्षामहे ये तीन शब्द आये हैं। इन तीनों शब्दों में समीक्षा शब्द का प्रयोग सम दृष्टि से दर्शन करने के अतिरिक्त तथ्यों को मीमांसापरक दृष्टि से देखना भी है। जीवन में सभी के प्रति सम दृष्टि रखना तथा मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना परिष्कृत तथा उन्नत व्यक्तित्व का परिचायक होता है, कितु मित्र का प्रत्येक स्थित में मित्र के लिए दृढ़ता पूर्वक खड़े रहना ही मित्रता की सच्ची कसौटी होती है। 'मिमिदा स्नेहने' धात से औणादिक 'क्त्र' प्रत्यय संयुक्त करने मे 'मित्र' शब्द की व्युत्पत्ति होती है। वास्तव में तो 'मित्र नामत्रायते इति मित्रः' अर्थात् जो कष्ट से रक्षा करता है, वही मित्र होता है।

प्रतीत होता है। मित्रता जीवन के लिए प्राणदायक औषधि स्वरूप होती है। सच्चे मित्र की प्राप्ति से नीरस जीवन में भी सरसता का संचार हो जाता है। मित्रता के लिए कहा गया है कि समस्त मनुष्यों के विपत्तिग्रस्त हो जानेपर मित्र के अतिरिक्त अन्य कोई भी व्यक्ति वाणी मात्र से भी सहायता नहीं करता है-

सर्वेषामेव मर्त्यानां व्यसने समुपस्थिते। वाड् मात्रेणासि साहाय्य मित्रादन्यो न सन्दधे।

पंचतंत्र मित्र सम्प्राप्ति-१२

मैत्री धर्म का निर्वहन सहज कार्य नहीं होता है। इसके लिए उभय पक्षीय परस्पर सहयोग एवं समन्वय की आवश्यकता होती है। परस्पर विश्वास, एक दूसरे की भावनाओं का मान-सम्मान रखना, स्व त्रुटि को निश्छल भाव से स्वीकार करना, परछिद्रान्वेषण से स्वयं को सर्व प्रकारेण मुक्त रखने का प्रयास करना, पर निंदा का सर्वथा परित्याग, आत्म प्रशंसा नहीं करने के स्थान पर मित्र के गुणों का बखान करना, परस्पर एक दूसरे को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करना तथा विषमतम स्थिति में भी मित्रता की रक्षा करने से मैत्री संबंध में प्रगाढता एवं स्थिरता आती है। राजनीति के प्रकांड विद्वान महात्मा विदुर ने किसी प्रकार का संबंध नहीं होने पर भी मैत्री भाव से व्यवहार करने वाले व्यक्ति को सच्चा मित्र तथा बंधु कहा है।

यः कश्चिदप्यसम्बद्धो मित्रभावेन वर्तते। स एव बंधुस्तान्मित्रं सगतिस्तत्परायणम्।

-विदुरनीति ४/३८

सच्चे मित्र से सम्पन्न व्यक्ति से अधिक सुखी तथा धनी इस संसार में अन्य कोई व्यक्ति नहीं होता है। समस्त प्रकार के धनों में मैत्री धन सर्वोत्कृष्ट तथा सवोत्तम होता है। समस्त तथ्यों के तथ्य परमपिता परमात्मा से मित्रता करने वाला व्यक्ति परम सुखी होता है। वेद में कामना की गयी है कि गोदोहन के लिए गौ का आवाहन करने के समान ज्ञान का वाहक ज्ञानी व्यक्ति अर्चनीय अथवा पूजनीय परमपिता परमात्मा से मैत्री संबंध स्थापित करने के लिए हम सभी परमात्मा का हृदय से गान करते हैं-

ब्रह्मणं बाह्मवाहस, गीर्भिः सखायमित्रियमयम्। गां न दोहसे हुवे।

-ऋग्वेद ६/४५/७

परमात्मा की मित्रता हमको इस प्रकार से प्राप्त हो जाये कि हमारा मन कालुष्य रहित हो जाये तथा हम सभी के प्रति सम दृष्टि से संयुक्त हो जाये। परमात्मा की मित्रता की प्राप्ति अमूल्य धन के तुल्य होती है। परमात्मा के संख्य भाव को प्राप्त करने की हम सभी कामना करते हैं। वेद में कामना की गयी है-

यन्नूनमश्यां गतिं, मित्रस्य यायां पथा। अस्यप्रियस्य शर्मणि, अहिंसानस्य साश्चिरे। - ऋग्वेद ५/६४/३

अर्थात् मुझको निश्चित रूप से गमन की समर्थ्य प्राप्त हो जाये। मैं प्रभु के मार्ग का ही अनुगमन करूं। इस अहिंसक प्रिय मित्र प्रभु के शरणदायक मार्ग पर अन्य लोग भी गमन करें। अतएव वेद में स्पष्ट रूप से परमात्मा से मैत्री संबंध स्थापित करने की कामना की गयी है। परमात्मा से मित्रता को प्राप्त करने वाला व्यक्ति सत्पथ का पथिक बन जाता है। उसके मन का कालुष्य मिट जाता है। बुद्धि निर्मल हो जाती है तथा मन दर्पण के तुल्य स्वच्छ तथा सुस्पष्ट हो जाता है। वास्तव में परम पिता परमात्मा की मित्रता जिसको प्राप्त हो जाती है उसका जीवन सफल हो जाता है। ○○

'सहयोग' को बनाए किसी की मुस्कान

आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितांत आदिवासी क्षेत्रोंमें संचालित हैं। उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परंतु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। यही सोचकर आर्य समाज ने महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से 'सहयोग' नामक योजना आरम्भ की। 'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल 'सहयोग' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामाजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किंतु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में है पाठ्यक्रम कोर्स पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकते हैं को 'सहयोग' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं। आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलौनों अथवा पुस्तकों को 'सहयोग' की सहयोगी संस्था बनकर व 'Cloth box' स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। तत्पश्चात 'सहयोग'आपके यहां से एकत्रित सामान संकलित कर अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज संस्थाओं के माध्यम से जरूरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी।

'सहयोग' की सहयोगी संस्था
आर्य समाज, बी-69 सेक्टर-33, नोएडा (उप्र)
संपर्क सूत्र : 0120-2505731, 4206693, 9871798221

उपनिषद और धर्म

डा. दीवान चन्द, डी.लिट.

उपनिषद का अर्थ 'पास बैठना' है। प्राचीन प्रथा के अनुसार गुरु किसी योग्य शिष्य को और पिता अपने ज्येष्ठपुत्र को ही 'रहस्य' की शिक्षा देता था। और ऐसा करते हुए उसे अपने निकट बैठाता था। इस संयोग के कारण रहस्य भी उपनिषद कहलाने लगा। यों तो उपनिषदों की संख्या सौ से भी अधिक है, परंतु प्रामाणिक उपनिषद ११ ही समझे जाते हैं। इन पर शंकराचार्य ने भाष्य लिखा है, और इनमें साम्प्रदायिकता का कोई अंश नहीं। इनमें कुछ गद्य में हैं, कुछ पद्य में और कुछ में गद्य और पद्य दोनों मिलते हैं। मात्रा में ९ उपनिषदें छोटी पुस्तकें हैं।

छान्दोग्य और बृहदारण्यक जो सबसे पुरानी समझी जाती हैं दूसरों से बड़ी है और महात्म्य में भी श्रेष्ठ है। ईश उपनिषद का विशेष स्थान है। यह यजुर्वेद का अंतिम अध्याय ही है, कुछ शब्दों का भेद हो गया है और ६ मंत्रों का क्रम भिन्न है, ऐसा प्रतीत होता है कि किसी आचार्य ने इस अध्याय को ही अपने उपदेश का मूलपाठ स्वीकार कर लिया। श्रुति के बाद तीन प्रकार के ग्रंथों की रचना हुई, ब्राह्मणों में वैदिक कर्म कांड का विस्तार किया गया, उपनिषदों में ज्ञान कांड के कुछ रहस्यों को स्पष्ट करने का यत्न किया गया, और स्मृतियों में नीति और राजनीति पर विशेष ध्यान दिया गया। स्मृति को धर्म शास्त्र भी कहते हैं।

उपनिषद धर्म शास्त्र नहीं, धर्म इनमें गौण विषय है। कई उपनिषदों में तो 'धर्म' शब्द का प्रयोग ही नहीं हुआ। ईश उपनिषद में १८ मंत्र हैं। १५वें मंत्र में धर्म शब्द मिलता है। मंत्र यह है-

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखं। तत्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।।

चमकीले पात्र से सत्य का मुख ढका हुआ है। हे पालन करने वाले परमात्मा! सत्य-धर्म को देखने के लिए उस परदे को हटा दो।

विज्ञान दृष्ट जगत का अध्ययन करता है। यह जगत प्रकटन, मात्र है और अस्थिरता और परिवर्तन का नमूना है। इस अस्थिरता के परे स्थिर सत्ता है। यह विज्ञान के अध्ययन का विषय नहीं। तत्व-ज्ञान इसका बाबत विचार करता है। दृष्ट जगत तो चमकता है, इंद्रियां इसे एक हद तक जानती है। अदृष्ट सत्ता का मुख दृष्ट जगत (चमकीले पात्रों) से ढका है। परमात्मा से प्रार्थना की गयी है कि वह उस द्वार को जिसके पीछे सत्ता का मुख ढका है, खोल दे। प्रार्थना करने वाला अपने आपको सत्य-धर्म के जिज्ञासु रूप में बयान करता है, अर्थात् उसके लिए सत्य और धर्म एक ही हैं। ज्ञान में सत्य का बोध होता है। धर्म में कर्त्तव्य पालन होता है। धार्मिक पुरुष के लिए इन दोनों में अंतर नहीं रहता। आम बोलचाल में भी हम 'मैं सत्य कहता हूं, मैं धर्म से कहता हूं' एक ही अर्थ में कहते हैं। केन, प्रश्न मुंडक, माण्डूक्य, ऐतरेय उपनिषदों में 'धर्म' पर कुछ नहीं कहा। कठ उपनिषद (४ १४) में 'धर्म' शब्द का प्रयोग हुआ है, परंतु मानव आचरण के संबंध में नहीं, अपितु तात्विक गुण के अर्थ में लिया है, और कहा है कि अज्ञानी पुरुष ही आत्मा और परमात्मा में धर्म की पृथकता (गुण-भेद) को देखता है।

तैत्तिरीय उपनिषद : इस उपनिषद में तीन वल्लियां हैं- शिक्षा वल्ली, ब्रह्मानंद वल्ली और भृगु वल्ली। तीसरी वल्ली में भृगु और उसके पिता का सम्वाद है। हम आशा करते हैं कि शिक्षा बल्ली में हमें कुछ मिल जायेगा। यह आशा पूरी हो जाती है।

शिक्षा के संबंध में दो बातें विशेष महत्व की है- १. जब तक विद्यार्थी आचार्य कुल में रहे, वह किस वातावरण में विकसित हो। २. शिक्षा की समाप्ति पर जब विद्यालय को छोड़े तो अपने साथ क्या आदर्श ले जाये।

विद्यालय में प्रमुख काम तो अध्यापन और अध्ययन का होता है, परंतु विद्यार्थी के व्यक्तित्व का विकास आचार्य के ध्यान में रहता है। विद्यालय का वातावरण विद्यार्थी के जीवन को एक सांचे में ढालता जाता है। इस वातावरण में प्रमुख अंश यह होते थे-

यों तो उपनिषदों की संख्या सौ से भी अधिक है, परंतु प्रामाणिक उपनिषद 11 ही समझे जाते हैं। इन पर शंकराचार्य ने भाष्य लिखा है, और इनमें साम्प्रदायिकता का कोई अंश नहीं। इनमें कुछ गद्य में हैं, कुछ पद्य में और कुछ में गद्य और पद्य दोनों मिलते हैं। मात्रा में 9 उपनिषदें छोटी पुस्तकें हैं। छान्दोग्य और बृहदारण्यक जो सबसे पुरानी समझी जाती हैं दूसरों से बड़ी है और महात्म्य में भी श्रेष्ठ है। ईश उपनिषद का विशेष स्थान है। यह यजुर्वेद का अंतिम अध्याय ही है, कुछ शब्दों का भेद हो गया है और 6 मंत्रों का क्रम भिन्न है, ऐसा प्रतीत होता है कि किसी आचार्य ने इस अध्याय को ही अपने उपदेश का मूलपाठ स्वीकार कर लिया। श्रुति के बाद तीन प्रकार के ग्रंथों की रचना हुई, ब्राह्मणों में वैदिक कर्म कांड का विस्तार किया गया, उपनिषदों में ज्ञान कांड के कुछ रहस्यों को स्पष्ट करने का यत्न किया गया, और स्मृतियों में नीति और राजनीति पर विशेष ध्यान दिया गया। स्मृति को धर्म शास्त्र भी कहते हैं।

शिक्षा की समाप्ति पर विद्यार्थी विद्यालय में कुछ बनने के लिए आता है, और शिक्षकों का काम भी उसे कुछ बनाना होता है। बहुतेरे लोग उच्चशिक्षा को खरीदते हैं, ताकि पीछे उसे अच्छे भाव पर बेच सकें। वे शिक्षा के साथ दीक्षा भी प्राप्त करते हैं जो प्रायः बेचने की वस्तु नहीं होती। यह मनुष्य को आप सामाजिक व्यवहार में अच्छे नागरिक का कार्य-क्रम प्रदान करती है। शिक्षा की समाप्ति पर गुरु शिष्य को अंतिम उपदेश देता है। आजकल यह काम दीक्षान्त-समारोहों में होता है। यह बात कुछ महत्व की है कि कुछ विश्वविद्यालयों में इस अवसर पर कार्यक्रम उस उपदेश के साथ आरम्भ होता है, जो तैत्तिरीय उपनिषद की शिक्षश बल्ली में गुरु शिष्य को देता था। वह उपदेश यह है- 'सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो। स्वाध्याय में कभी प्रमाद न करो।

ऋत : नैतिक नियम का पालन, सत्य : प्राकृतिक नियम का पालन (या सत्य भाषण) तप : इन्द्रिय संयम, मन का शासन। अग्नि होत्र : दैनिक कर्म, अतिथि सत्कार, मानवता का व्यवहार।

विद्यालय विद्यार्थियों पर जो विशेष छाप लगाना चाहता है, उसका स्वरूप क्या है? यह एक विवाद का विषय है। आजकल भी शिक्षा-शास्त्रियों में कुछ कहते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण है, इसी से विद्यार्थी अच्छे नागरिक बन सकते हैं। कुछ और कहते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को जीवन-संग्राम में अपना भाग लेने के योग्य बनाना है। एक विचार यह भी है कि शिक्षा काल मस्तिष्क को उज्जवल बनाने और ज्ञान की वृद्धि में खर्च होना चाहिए। उपनिषद में इस प्रसंग को समाप्त करते हुए कहा है-

1. सत्यवचा के विचार में सत्य (शुभ आचार) प्रमुख है। 2. तपो नित्य के विचार में तप प्रमुख है। 3. नाक के विचार में स्वाध्याय और प्रवचन प्रमुख है।

यदि यह तीनों आज भारत में आवें तो हरेक को बहुतेरे शिक्षा-शास्त्री अपने मत के मिलेंगे।

शिक्षा की समाप्ति पर : शिक्षा की समाप्ति पर विद्यार्थी विद्यालय में कुछ बनने के लिए आता है, और शिक्षकों का काम भी उसे कुछ बनाना होता है। बहुतेरे लोग उच्चशिक्षा को खरीदते हैं, ताकि पीछे उसे अच्छे भाव पर बेच सकें। वे शिक्षा के साथ दीक्षा भी प्राप्त करते हैं जो प्राय: बेचने की वस्तु नहीं होती। यह मनुष्य को आप सामाजिक व्यवहार में अच्छे नागरिक का कार्य-क्रम प्रदान करती है। शिक्षा की समाप्ति पर गुरु शिष्य को अंतिम उपदेश देता है। आजकल यह काम दीक्षान्त-समारोहों में होता है। यह बात कुछ महत्व की है कि कुछ विश्वविद्यालयों में इस अवसर पर कार्यक्रम उस उपदेश के साथ आरम्भ होता है, जो तैत्तिरीय उपनिषद की शिक्षश वल्ली (अनुवाक ७७) में गुरु शिष्य को देता था। वह उपदेश यह है-

'सत्य बोलो, धर्म का आचरण करो। स्वाध्याय में कभी प्रमाद न करो। दक्षिणा के रूप में प्रिय धन आचार्य को भेंट करो। गृहस्थ में प्रवेश करो, ताकि कुटुम्ब परम्परा टूट न जाये।

सत्य से, धर्म से, शुभ कर्मों से कभी चूकना नहीं। उन्नति के साधनों के प्रयोग में कभी न चूको। पढ़ने-पढ़ाने में, देव-कार्य और पितृ-कार्य के करने में कभी न चूको। तुम्हारे लिए तुम्हारी माता पूज्य हो, तुम्हारा पिता पूज्य हो, आचार्य पूज्य हो और अतिथि पूज्य हो।

हमारे आचरण में जो कर्म शुभ है, उनका सेवन करो, अन्य कर्मों का नहीं, हमारे आचार में जो शुभ अंश है, उसका अनुसरण करो, अन्य अंशों का नहीं। जो कोई विद्वान हमसे उत्कृष्ट हो, वह अतिथि के रूप में आ जाये, तो उसे सत्कार से आसन दो और ठहराओ।

दान देना चाहिए, श्रद्धा से दो, श्रद्धा न हो तो दो। देने की योग्यता है, इस ख्याल से दो; लोक लज्जा से दो, भय से दो। हां, जो कुछ दो, विचार करके दो। कभी तुम्हें आचार या आचरण के संबंध में शंका हो, तो देखो कि अच्छे विचार वाले, योग्य, भले, अच्छे स्वभाव वाले धर्म-काम ब्राह्मण उस प्रसंग में कैसा व्यवहार करते हैं वैसा ही तुम भी करो। यह आदेश है, यह उपदेश है, यह वेद का रहस्य है। यही शिक्षा है। इसी प्रकार विचारना चाहिए।

छांदोग्य उपनिषद : दो बड़ी उपनिषदों-बृहदारण्यक छांदोग्य-में हमें दसरी उपनिषद से ही सहायता मिलती है, परंतु वह सहायता बहुत मूल्यवान है। प्रपाठक २:२३ में कहा है- 'धर्म के तीन स्कंध हैं, यज्ञ, अध्ययन और दान पहला स्कंध है, तप दूसरा स्कंध है, और ब्रह्मचारी का आचार्य कुल में निवास करना तीसरा स्कंध है। जो लोग इस धर्म का पालन करते हैं वे पुण्यलोकों को प्राप्त करते हैं। अमरत्व तो ब्रह्म में विश्वास करने वालों को ही मिलता है।

इस वाक्य में दर्म की वृक्ष से उपमा की गयी है। वृक्ष एक जीवित पदार्थ है, और बृहदारण्यक उपनिषद के शब्दों में, उन्नति, बढ़ना, जीवन का प्रमुख चिन्ह है। एक कथन के अनुसार अच्छा पुरुष वह है जो अधिक अच्छा बनने के यत्न में लगा रहता है। वाक्य के अंतिम भाग में कर्म की अपेक्षा ज्ञान को उत्कृष्ट कहा गया है। धर्मानुसार आचरण करने से व्यक्ति पुण्यलोग को प्राप्त करता है, और अपनी कमाई का फल भोगने के बाद फिर कर्मलोक में लौट आता है, ब्रह्मज्ञान को प्राप्त करने पर आना-जाना समाप्त हो जाता है। ○○

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे

इस अंक में ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के दूसरे मंत्र की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है, मनन चिन्तन कर जीवन सफल करें।

- प्रबंध संपादक

स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

(गतांक से आगे...)

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः -अथर्व. ११-५-१

मनुष्य का यश, तेज, ज्योति, चमक, ब्रह्मचर्य सब प्रभु के गर्भ में उनकी व्यवस्था और छत्रछाया में पलते हैं। यशस्वी के यश, तेजस्वी के तेज, ब्रह्मचारी के ब्रह्मचर्य, ज्योतिष्मान् की ज्योति को मिटाने वाले बहुत होते हैं। किंतु जिसने प्रभु कृपा का कवच धारण कर लिया है, उसके यश की रक्षा प्रभु की कृपा से हो जाती है। हृदय रमणीयता की दृष्टि से महर्षि जीवन की एक घटना का उल्लेख उपयोगी है-

मथुरा नगरी, मुरलीधर, बंशीधर, गोपी-राधा-रासलीला की मिथ्या पौराणिक मान्यता से प्रभावित नगरी में कालजिह्व, आदित्य, ब्रह्मचारी, स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यान हो रहे थे। ऋषि का उग्र खंडन सुनकर मथुरा की भक्तमंडली तिलमिला उठी थी। पंडे पुजारी ईर्ष्या द्वेष से जलने लगे- ''द्वन्द्वी देखते थे दलद्वेष द्वन्द्वियो के उसे, दिव्य दृष्टियों को दीख पड़ता निर्द्वन्द्व था। प्रबल प्रचण्ड पाखंड खंड-खंड करिबे को बज्र, गौरव गुमान गुण गरिमा गयन्द था।''

सो जैसा प्रचंड पाखंड, उससे कहीं बढ़-चढ़कर प्रचंड खंडन कुठार का प्रहार। पंडे पुजारियों में विद्या होती, वे सत्य पर आरूढ़ होते तो ऋषि से शास्त्रार्थ करते, तर्क का उत्तर तर्क से देते, प्रमाणों का उत्तर प्रमाणों से देते। यहां तो पंडे पुजारियों के पास विद्या नहीं, तर्क नहीं, प्रमाण नहीं। थी ईर्ष्या, था द्वेष, था छल प्रपंच। सो आदित्य ब्रह्मचारी के विमल-धवल-निर्मल चरित्र को, उनकी साधना, उनके पावन पवित्र यश को कलंकित करने के लिए एक वेश्या को पंडे पुजारियों ने पटाया। शरीर का व्यवसाय करने वाली को साड़ियां, आभूषण, रुपये मिल रहे थे। राजी हो गई ऋषि को बदनाम करने के लिए। सजधज कर, बन ठनकर, चल पड़ी ऋषि की कुटिया की ओर। पंडे पुजारी कुटिया के पास कुछ दूर पर बैठे हैं। प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वेश्या कुटी के अंदर जाय, हल्ला करे और ये टूट पड़ें और आदित्य ब्रह्मचारी को वेश्या बुलाने की बदनामी का शिकार बना लें।

वेश्या गई, कुटी का द्वार खुला था। आदित्य ब्रह्मचारी ध्यान में समाधिस्थ थे। कुंदन-काया, ब्रह्मचर्य से उदीप्त मुख मंडल, जगज्जननी का वत्स, हिरण्यगर्भ के आंचल में सौम्य भाव से भरपूर, मोहिनी मूरति, सुहानी सूरति, प्रभु का वत्स, सौम्य वत्सलता से दमक रहा था। वेश्या अभिभूत हो गयी। आभा मंडल का विकरण उसे और भी अधिक विगलित कर गया। महर्षि की कुंदन काया पर परमप्रभु की कृपा का कवच था। वेश्या के हृदय में भाव उठे- कैसा निर्मल पवित्र सरल साधु है? तू इसे क्यों बदनाम करे, आगे ही बहुत पाप किये हैं, अब और मत कर।

वेश्या सामने बैठ गयी। आभूषण उतार-उतार कर ढेर लगा दिया। समाधि टूटी, ऋषि की आंख खुली, कृपाकोर बरस पड़ी, आंखों में करुणा की डोर लहरा उठी। होंठ खुले-आवाज आयी, 'मां! कैसे आई हो?' वेश्या का हृदय फूट पड़ा, फफक-फफक कर आंसू चूने लगे। महान ऋषि भक्त, सहृदय कवि, लेखनी के जादूगर पं. चमूपति जी के पद का आनंद लीजिए-

'माई! क्या लाई इस साधु के डेरे? कुछ नहीं साधु, मेरे पाप हैं घनेरे।'

मनुष्य का यश, तेज, ज्योति, चमक, ब्रह्मचर्य सब प्रभु के गर्भ में उनकी व्यवस्था और छत्रछाया में पलते हैं। यशस्वी के यश, तेजस्वी के तेज, ब्रह्मचारी के ब्रह्मचर्य, ज्योतिष्मान् की ज्योति को मिटाने वाले बहुत होते हैं। किंतु जिसने प्रभु कृपा का कवच धारण कर लिया है, उसके यश की रक्षा प्रभु की कृपा से हो जाती है। हृदय रमणीयता की दृष्टि से महर्षि जीवन की एक घटना का उल्लेख उपयोगी है- मथुरा नगरी, मुरलीधर, बंशीधर, गोपी-राधा-रासलीला की मिथ्या पौराणिक मान्यता से प्रभावित नगरी में कालजिह्व, आदित्य, ब्रह्मचारी, स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यान हो रहे थे। ऋषि का उग्र खंडन सुनकर मथुरा की भक्तमंडली तिलमिला उठी थी। पंडे पुजारी ईर्ष्या द्वेष से जलने लगे- ''द्वन्द्वी देखते थे दलद्वेष द्वन्द्वियो के उसे, दिव्य दृष्टियों को दीख पड़ता निर्द्वन्द्व था। प्रबल प्रचण्ड पाखंड खंड-खंड करिबे को बज्र, गौरव गुमान गुण गरिमा गयन्द था।'' सो जैसा प्रचंड पाखंड, उससे कहीं बढ़-चढ़कर प्रचंड खंडन कुठार का प्रहार। पंडे पुजारियों में विद्या होती, वे सत्य पर आरूढ़ होते तो ऋषि से शास्त्रार्थ करते, तर्क का उत्तर तर्क से देते, प्रमाणों का उत्तर प्रमाणों से देते। यहां तो पंडे पुजारियों के पास विद्या नहीं, तर्क नहीं, प्रमाण नहीं। थी ईर्ष्या, था द्वेष, था छल प्रपंच। सो आदित्य ब्रह्मचारी के विमल-धवल-निर्मल चरित्र को, उनकी साधना, उनके पावन पवित्र यश को कलंकित करने के लिए एक वेश्या को पंडे पुजारियों ने पटाया। शरीर का व्यवसाय करने वाली को साड़ियां, आभूषण, रुपये मिल रहे थे। राजी हो गई ऋषि को बदनाम करने के लिए। सजधज कर, बन ठनकर, चल पड़ी ऋषि की कुटिया की ओर।

वेश्या पुन: बिलख पड़ी-

'मैं आयी पाप की पोट लिए, यश गंग में पोट पछार लियो। चिरकाल चरित्र के दर्पन में निज चित्र भी आप निहार लियो। मैंने देखी चरित्र की आज दया, ऋषि राज उठा पतवार लियो। मैं डूबी, डुबाने को आई जिसे, उसने ही मुझे भव पार कियो।।'

पापात्मा वेश्या पाप-पतन के संकल्प लेकर आयी थी और पुण्य प्रसाद लेकर लौटी। पापी धूर्त, बदनाम करने की भावना वाले देखते ही रह गये। योगी साधु का यश अक्षय सुरक्षित रहा। यश प्रभु के गर्भ में पलता है।

महात्मा मुंशी राम पर मानहानि का अभियोग एक पौराणिक नेता ने चलाया। महात्मा जी को प्रमाणों का बंडल कोई पीछे से पकड़ा गया और महात्मा जी के यश की रक्षा हो गयी। अपने गर्भ में स्थित यश रूपी शिशु की रक्षा प्रभु ने की। हिरण्यगर्भ का एक और रूप देखिए। व्यक्ति परोपकार करता है उसने दुखिया का दुख दूर किया, अंधे को रास्ता दिखाया, कोई पुण्य कार्य किया, ऐसे परोपकारी के चेहरे पर तेज दमक उठा। यह तेज, यह ज्योति, प्रभु के गर्भ से खुराक पाती है। सदाचारी ने ब्रह्मचर्य का व्रत किया, प्रभु की कृपा का कवच उसके व्रत की रक्षा करता रहा। शरीर तेजस्वी हो उठा, मुखमंडल पर ओजतेज का वैभव दमकने लगा। यह सब हिरण्य की आभा हिरण्यगर्भ के गर्भ में पलती है।

हिरण्य का एक अर्थ 'हितरमणीय', 'हृदयरमण' भी निरुक्त में दिया है। कोई संगीत वाद्य में रमण करता है। कोई नृत्य अभिनय में रमण करता है। कोई निंदा में, कोई चापलूसी में, कोई जुआ-शराब में भी रमण करता है। किंतु प्रभु के ध्यान में रमण हितकारी है। शराब का नशा तो उतर जाता है किंतु भक्ति का मद तो चढ़ा ही रहता है-

'नाम नशा शराब का, उतरि जात परभात। नाम खुमारी नानका, चढ़ी रहै दिन रात।।'

सामवेद का निम्न मंत्र प्रभु के पवित्र रमणीय मद का बड़ा प्यारा वर्णन कर रहा है-

'यस्ते महोवरेण्य स्तेना पवस्तान्धसा। देवावीरघशंसहा।। -साम.४७०

प्रभु का मद वरणीय है। प्रभु का मद पाप-प्रशंसा को हनन करने वाला है- अघशंसहा है। यह है हिरण्यगर्भ की हित-रमणीयता, हृदय रमणीयता का एक रूप है। सो जगदीश्वर हिरण्यगर्भ के गर्भ में ज्योति का, अमृत का, यश का, ईमान, सत्यनिष्ठा, चरित्र सबका पालन संरक्षण होता है। यह तो प्रथम खंड 'हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे' का चिंतन हुआ मंत्र का द्वितीय खंड है-

2. **(सः हिरण्य गर्भः) भूतस्य जातः परिरेक आसीत्-** हिरण्य गर्भ पूर्व से, सष्टि उत्पन्न होने के पूर्व से वर्तमान हैं। और भूतपति के रूप में हैं। भूत मात्र के पति पालक हैं। 'भूतस्य जात: भूतपतिः' का एक रूप तो बना कि सृष्टि से पूर्व, प्रलयावस्था में, महाभूत, तन्मात्र, अहंकार और महत्तत्व से भू पूर्व, सत्व, रज, तम की 'अ-साम्यावस्था' में जब न सत् था, न असत् था, न रजांसि (परमाणु या लोक), कुछ भी नहीं था। किंतु प्रकृति की अ-साम्यावस्था में उसे सर्जनोन्मुख होने के लिए समर्थ बनाना था। यह 'अग्रे वर्तमान भूतपति' के पालन का स्वरूप है।

बात को समझने के लिए एक निजी कल्पना कर रहा हूं। मानव श्रान्त-क्लान्त सामर्थ्य क्षीण होकर सुषुप्ति में लीन होकर कार्य सम्पादन का सामर्थ्य प्राप्त करता है। प्रगाढ़ निद्रा, श्वासों का आना जाना, परिपूर्णतः शान्त अवस्था, कुछ काल के पश्चात् मनुष्य को क्रियाशीलता के सामर्थ्य से सम्पन्न कर देता है। यह क्रियाशीलता-सामर्थ्य-सम्पादन की पद्धति Techniqu process मनुष्य का चिंतन, कृतित्व या आविष्कार नहीं है। यह निष्क्रिय-शान्त-अवस्था से क्रियाशीलता के सामर्थ्य का सम्पादन प्रभु की, हिरण्यगर्भ की, सर्जनात्मक व्यवस्था है। यही बात श्रान्त-क्लान्त, घिसी-पिटी, ब्राह्म दिन भर क्रियाशील सृष्टि की भी है। 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' हम दिन भर काम करके रात को शान्त होकर, निष्क्रिय होकर, क्रियाशीलता के सामर्थ्य को प्राप्त करते हैं। सृष्टि भी प्रलयकाल में शान्त-निष्क्रिय होकर प्रभु की व्यवस्था से सर्जन सामर्थ्य प्राप्त करती है। यह सर्जन सामर्थ्य वही उपलब्ध करा सकता है जो पहले से इस व्यवस्था Techniqu process का स्वामी हो। तभी 'भूतपतिः समवर्तताग्रे' बुद्धिगम्य होता है। सृष्टि के आरम्भ में प्रकृति शक्ति से परिपूर्ण होती है। धरती अकृष्ट पच्या-बिना जोते बोये भी पर्याप्त खाद्य देती है। हवा पानी स्वच्छ प्रदूषणरहित होते हैं। वनों में फलकन्द मूल सुलभ होते हैं। तरुमूल में निवास, मुनि अन्न (बिना कृषि के) सुलभ रहता है। सृष्टि के अन्त में श्रान्त-क्लान्त निर्बल प्रकृति, प्रदूषित जलवायु, निर्बल अन्न, कंदमूल फल आदि दुर्लभ निर्बल पशु प्राणी प्रभु प्रलय की निशा में पालन करके सामर्थ्य सम्पन्न करते हैं। यह भूत पति का पतित्व, पालनहार की पालना विचित्र भक्त रमणीय है।

यह भूतपति का रूप सृष्टि से पूर्व, प्रलयकाल में हुआ। किंतु सृष्टि की अवस्था में भी प्रभु का पालक स्वरूप अतितराम् भक्त रमणीय है। जगदीश्वर के गर्भ में, उसकी व्यवस्था में, उसकी छात्रछाया में, पालन होता है। पालन-पोषण-रक्षण नियमन होता है- ज्योति का, प्रतिभा का, यश का, ईमान सत्य निष्ठा का, चरित्र-प्रतिष्ठा का। प्रायः सभी महापुरुषों को, सुधारकों, धर्म प्रचारकों को गाली मिलती है, उन पर धूल और पत्थर बरसाये जाते हैं।

(शेष अगले अंक में)... ○○

वेदाः महत्वम्

अत्र एकस्मिन् एव मन्त्रे शासकाय शिक्षकाय च उपदेशः प्रदत्तः अस्ति यत् संयमीपुरुषः एव योग्यः प्रशासकः कुशल शिक्षकः च भवितुं शक्नोति। आनेन एतदपि ध्वनितः भवति यत् व्यभिचारिजनः न तु कुशलप्रशासकः भवितुं शक्नोति न चापि कुशलशिक्षकः इति। यस्मिन् राष्ट्रे समाजे वा शिक्षकाः शासकः च द्वावपि संयमिनौ भविष्यतः, तत्र सर्वाः अपि व्यवस्थाः स्वतः एव सुव्यवस्थिताः भविष्यन्ति। सर्वे प्राणिनः सुखिनः भविष्यन्ति। न केवलम् एतावद् अपि तु सत्यस्य महत्त्वं जीवन कियत् अस्ति इति वेदेन एवं कथितमस्ति

ओमकार शास्त्री
संस्कृत प्रवक्ता,
आर्ष गुरुकुल, नोएडा

विश्वे धर्मपदवाच्याः (ये वस्तुतः धर्मेति कथयितुं न शक्याः सन्ति) नैकाः सम्प्रदायाः नैकाः पन्थानः विद्यन्ते, येषां स्वस्वसम्प्रदायग्रन्थाः अपि सन्ति। एतस्यां परिस्थितौ वेदान् एव परमप्रमाणरूपेण किमर्थं मन्येमहि? इति प्रश्नः स्वाभाविकतया एव उद्भवति। अयं कश्चन एतादृशः प्रश्नः वर्तते, यस्य उत्तरदानेन विना वेदान् प्रमाणरूपान् मन्तुं वयं विश्वस्य केनापि मानेन आग्रहं कर्तुं न शक्नुमः। न कमपि एतदनुगुणम् अनुसर्तुं वक्तुं शक्नुमः। प्रश्नः तु सर्वथोचितः अस्ति, अपि च अहं मन्ये यत् वेदान् परमप्रमाणं मन्यमानैः प्रत्येकैः अपि जनविशेषैः अस्य युक्तिपूर्वकमुत्तरं देयमेव। लेखेऽस्मिन् अस्यैव प्रश्नस्य उत्तरप्रदानस्य प्रयासः क्रियमाणः वर्तते।

प्रश्नस्यास्य उत्तरदानात् प्राक् मदीयः एकः प्रश्नः वर्तते यत् दीपक-सिक्थवर्तिका-विद्युत्प्रभृतीनां विविधप्रकाश-साधनानाम् उपस्थितौ अपि प्रकाशार्थं सूर्यस्य कृते एव किमर्थम् अधिकं महत्त्वं प्रदीयते? इति। यदि सूर्यस्य प्रकाशे सूर्ये वा काचिद् विशेषता स्यात् तर्हि अस्माभिः अन्येषां प्रकाशानाम् अपेक्षया सूर्यप्रकाशस्य एव सर्वथाभावेन श्रेष्ठता स्वीकार्या भवेत्। सूर्यप्रकाशः किमर्थं श्रेष्ठः वर्तते? अस्मिन् विषये उपयोगितादृष्ट्या अस्माभिः विचारणीयं भविष्यति।

सूर्यस्य विशेषता : **1.** एतद् सर्वसुलभमस्ति। **2.** सहजः अस्ति। **3.** अहानिकारकः वर्तते। **4.** भेदभावरहितः वर्तते। **5.** श्रमसाध्यः न वर्तते।

पञ्चैतानि ईदृशानि कारणानि सन्ति, येभ्यः सूर्यस्य प्रकाशः अन्येषां प्रकाशानाम् अपेक्षया सर्वश्रेष्ठः वर्तते। एतेषां कारणानां व्याख्या शीर्षकाणामभिधानेन स्वयमेव भवति। एवम्प्रकारेण एतादृशैः विशेषकारणैः युक्ताः वेदाः अपि न केवलं केषाञ्चिदेव श्रध्दालुजनेभ्यः एव धर्मस्य सर्वश्रेष्ठग्रन्थाः सन्ति अपितु मानवसमूहस्य कृते एव सर्वश्रेष्ठग्रन्थाः सन्ति। वेदाः सर्वेभ्यः जाति-देश-समाजसम्बद्धेभ्यः मनुष्येभ्यः भेदभावरहित-समानोपदेशान् दिशावबोधान् कर्त्तव्यावबोधान् च प्रयच्छन्ति।

मित्रदृष्टि : **दृते दृहं मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।** –यजु.३६/१८

मां सर्वे मित्रदृष्ट्या पश्येयुः, अहमपि सर्वान् मित्रभावेन पश्येयम्। वयं सर्वे परस्परं मित्रदृष्ट्या पश्येम।

सर्वत्र अभयभावः **अभयं मित्रादभयमित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।**

–अथर्व. १९/१५/६

अर्थात्, अस्माकं मित्रेभ्यः, शत्रुभ्यः, ज्ञातपुरुषेभ्यः, अज्ञातपुरुषेभ्यः, कस्माच्चिदपि भयं न स्यात्। अस्माकं कृते रात्रिः, समस्तदिशः च अभयाः सन्तु।

प्रेम : **अन्यो अन्यमभिहर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।।**

-अर्थव. ३/३०/१

वयं परस्परं तथा स्नेहं कुर्मः यथा गौः स्वनवजातवत्सेभ्यः स्नेहं करोति। अत्र कस्मैचिदपि व्यक्तिविशेषाय समाजविशेषाय वा इमे उपदेशाः न सन्ति, अपितु मानवमात्रस्य कृते वर्तन्ते।

सहचलनम् : **सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनासि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते।।** -ऋ. १०/१९१/२

मन्त्रेऽस्मिन् वेदः उपदिशति यत् त्वं राष्ट्रेण साकं चल, साकं वद, युष्मासं अपि सङ्गतिपूर्वकं विचारं कुरुत। अर्थात् सर्वेऽपि राष्ट्रेण साकं मिलित्वा विचारं कुरुत। मिलित्वा कार्यं कुरुत। येन सर्वेभ्यः तेषां श्रमभागप्राप्तिः भवेत्।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्। समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।

–ऋ. १०/१९१/३

प्रभुः उपदेशान् प्रददाति यत् अहं समानरूपेण तुभ्यं समस्तानि वस्तूनि प्रददन् अस्मि, परन्तु त्वं स्वपुरुषार्थं ज्ञानं च अनुसृत्य एव एतानि प्राप्तुं शक्नोषि। ज्ञानमपि समानं कार्यशक्तिः अपि समाना भवितव्या।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। –ऋ. १०/१९१/३

अर्थात् तव संकल्पशक्तिः, अध्यवसायः, हृदयम्, एवञ्च मनः सर्वमपि समानं स्यात्। उक्तेषु त्रिष्वपि मन्त्रेषु राष्ट्राय भावनात्मकैकतायाः उपदेशं प्रभुः प्राददात्। सर्वे एकेन मनसा, सङ्कल्पेन च भूत्वा कार्याणि कुर्युः, अपि च स्वस्वभागान् कार्यानुसारं प्राप्नुयुः।

सह अशनम् (सहभोजनम्) केवलाघो भवति केवलादी।।

–ऋ. १०/११७/६

अर्थात् यः मनुष्यः यज्ञोपासनाद्वारा न ईश्वरं तर्पयति, अपि च न मित्राणि तर्पयति, एवम् एकाकी धनोपयोगं कुर्वाणः जनः केवलं पापमेव भक्षयति। अत्र वेदाः उपदिशन्ति यत् मिलित्वा सेव्यताम् इति। तद्यथा– **सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे...।।** यजु. १८/९

व्यावहारिकः उपदेशः- अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवान्।। अथर्व. ३/३०/२

कुटुम्बे अस्माकं कीदृशः व्यवहारः स्यात्, अस्मिन् विषये वेदः उपदिशति यत् पुत्रः पितुः अनुव्रतः स्यात् माता शान्ता, पवित्रमनस्विनी स्यात्, एवञ्च पत्नी पत्युः कृते सर्वदा सुभाषिणी स्यात्।

संयमः (ब्रह्मचर्योपदेशः) -

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत्।। अथर्व. ७१/५/१९

ब्रह्मचर्यस्य तपोबलेन देवाः विद्वान्सः पुरुषाः च मृत्युम् अपि वशीकुर्वन्ति। अर्थात् मृत्युञ्जयाः भवन्ति। निश्चयेन एव इन्द्रः स्वब्रह्मचर्यबलेन प्रजाभ्यः स्वराष्ट्रे स्वर्गसमं सुखं प्रददाति।

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति।
आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते।। अथर्व. ११/५/१८

अत्र एकस्मिन् एव मन्त्रे शासकाय शिक्षकाय च उपदेशः प्रदत्तः अस्ति यत् संयमीपुरुषः एव योग्यः प्रशासकः कुशल शिक्षकः च भवितुं शक्नोति। आनेन एतदपि ध्वनितः भवति यत् व्यभिचारिजनः न तु कुशलप्रशासकः भवितुं शक्नोति न चापि कुशलशिक्षकः इति। यस्मिन् राष्ट्रे समाजे वा शिक्षकाः शासकः च द्वावपि संयमिनौ भविष्यतः, तत्र सर्वाः अपि व्यवस्थाः स्वतः एव सुव्यवस्थिताः भविष्यन्ति। सर्वे प्राणिनः सुखिनः भविष्यन्ति। न केवलम् एतावद् अपि तु सत्यस्य महत्त्वं जीवने कियत् अस्ति इति वेदेन एवं कथितमस्ति

सत्येनोत्तभिता भूमिः। अथर्व. १४/९/१

पृथिवी सत्यबलेन अवस्थिता वर्तते। अत्र वेदवाक्येन एतद् प्रकटितं यत् व्यवहारे असत्यस्य आगमनेन अस्मदीया जीवनधारारूपिणी पृथिवी अर्थात् क्रियाकलापाः आधारहीनाः अवलम्बनहीनाः च भविष्यन्ति। यतोहि सत्यस्य अभावे परस्परं विश्वासः नष्टः भविष्यति, येन परस्परं व्यवहारः एव सिद्धः न भवति। एतेन समग्रमपि वातावरणं सुखविहीनम् अशान्तञ्च भविष्यति। एवम्प्रकारेण वेदानां कश्चनापि उपदेशः एकाङ्गी नास्ति, अपितु सार्वभौमं सार्वकालिकञ्च अस्ति। एषाम् उपदेशाः जाति-वर्ग-सम्प्रदायविशेषाय च न वर्तते। वेदाः मानवानां प्राणिमात्राणां च कल्याणाय आचारस्य निर्देशान् कुर्वन्ति। तथा च दिव्यकर्मभिः सन्मानवः भवितुं प्रेरणां प्रयच्छन्ति।

मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।। -ऋ. १०/५३/६

एवमेव वेदेषु विश्वसमुदायस्य कृते कुटुम्बवत् दर्शनस्य उपदेशः प्रदत्तः वर्तते। यस्यानुसारं समस्तमपि चराचरं प्राणिजगत् एकस्यैव नीडस्य निवासीवत् भवितव्यं वर्तते –

यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्। -यजु. ३२/८

वर्तमाने मानवकुलस्य विपद्रूपेण प्रादुर्भवन्तं पर्यावरणप्रदूषणमपि वेदाः गभीरतया स्वीकुर्वन्ति। अपि च विश्वपर्यावरणं सततसन्तुलितम् अभिरक्षणाय मानवः मुहुर्मुहुः जागरितः वर्तते। अनेकैः मन्त्रैः पर्यावरणं सन्तुलनाय जलवायु-वृक्ष-वनस्पति-प्राकृतिकजीवनरक्षायै भूरिशः प्रार्थना कृता वर्तते –

द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः ...।। यजु. ३६/१८

प्राकृतिकपदार्थेषु देवत्वकल्पना एषां सुरक्षायाः अनिवार्यतां प्रकटयति। यतोहि वेदाः एवं मन्वते यत् एषां रक्षायामेव प्राणिसङ्कुलस्य रक्षाभावः निहितः वर्तते इति।

एवम्प्रकारेण वयं पश्यामः यत् यथा सूर्यस्य प्रकाशः सर्वप्रकाशेषु श्रेष्ठः वर्तते तथा एव वेदानां ज्ञानरूपी प्रकाशः अपि विश्वस्य समस्त-सम्प्रदायग्रन्थेषु श्रेष्ठः वर्तते। अतः वेदाः एव प्राणिसङ्कुलस्य ग्रन्थः वर्तते। एते उपदेशाः व्यष्टिपरकाः न वर्तते अपितु समष्टिपरकाः वर्तन्ते। अतः येन प्रकारेण अग्नि-जल-वायु-सूर्यादयः सर्वेषाम् सन्ति तद्वत् वेदज्ञानमपि सर्वेषाम् अस्ति। अन्ततः एकस्मिन् दिने विश्वस्य सर्वमानवैः वेदाः धर्मग्रन्थत्वेन स्वीकरणीयाः भविष्यन्ति। अयमेव विश्वशान्तेः एकमात्रोपायः वर्तते।

OO

सूचना

- **'विश्ववारा संस्कृति' स्मारिका दिसम्बर : 2017 के अंक में कुछ सदस्यों के नाम छूट गए हैं जिसके लिए हमें खेद है।**
- **पृष्ठ संख्या-49 'मुक्तक' शीर्षक लेख में गलती से डा. मंजू नारंग का नाम छप गया है जिसके लिए हमें खेद है।**
- **सभी प्रबुद्ध लेखकों से निवेदन है कि अपने सारगर्भित लेख 'विश्ववारा संस्कृति' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक आर्य समाज नोएडा की मासिक पत्रिका में भिजवाकर अपना सहयोग प्रदान करें।**

व्यवस्थापक

श्री जवाहर भाटिया व सचदेवा जी प्रधान दिलशाद गार्डन व अशोक विहार का सम्मान करते आचार्य जयेन्द्र कुमार, प्रधान रवीन्द्र सेठ, कै. अशोक गुलाटी मंत्री

महिला समाज की प्रधाना जी द्वारा शशिप्रभा कुमार जी का सम्मान

मुख्य अतिथि व संरक्षक गुरुकुल अमेटी शिक्षण संस्थान के निदेशक श्री आनंद चौहान द्वारा उद्बोधन

आर्य समाज के पदाधिकारियों द्वारा आचार्य जयेन्द्र कुमार जी का सम्मान

महिला सम्मेलन का संयोजन करतीं महिला समाज की मंत्री श्रीमती आदर्श बिश्नोई

आर्य जगत के प्रसिद्ध संत व 9 गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी का स्वागत

गीत प्रस्तुत करते हुए आर्ष गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारी

ब्र. ताराचन्द भाषण प्रस्तुत करते हुए

अधिकारियों द्वारा प्रेस रिपोर्टर कामिनी झा का सम्मान

चाणक्य-चंद्रगुप्त नाटक के सभी पात्र

विशेष प्रतिभाशाली ब्रह्मचारियों का सम्मान

नाटक में घनानंद जी अभिनय करने वाले विशाल आर्य का सम्मान

ध्वज फहराने के पश्चात राष्ट्रगान गाते हुए आर्यजन

समारोह अध्यक्ष डा. विक्रम सिंह जी का स्वागत करते आचार्य जी, प्रधान जी एवं मंत्री जी

श्री धर्मपाल जी का सम्मान करते आचार्य जयेन्द्र कुमार जी

श्री छत्रपति रणजीत राय को आचार्य जी, प्रधान जी एवं मंत्री जी सम्मानित करते हुए

आचार्य जी द्वारा महिला प्रधाना गायात्री मीना, मंत्री आदर्श बिश्नोई एवं कोषाध्यक्षा संतोष लाल का सम्मान

यजमानों को आशीर्वाद देते संन्यासी वृंद

गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारी शारीरिक प्रदर्शन करते हुए

नेताजी सुभाष चंद्र बोस

जन्म : 23 जनवरी
शत्-शत् नमन

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा में कटक के एक संपन्न बंगाली परिवार में हुआ था। बोस के पिता का नाम जानकीनाथ बोस और मां का नाम प्रभावती था। जानकीनाथ बोस कटक शहर के मशहूर वक़ील थे। प्रभावती और जानकीनाथ बोस की कुल मिलाकर 14 संतानें थी, जिसमें 6 बेटियां और 8 बेटे थे। सुभाष चंद्र उनकी नौवीं संतान और पांचवें बेटे थे। अपने सभी भाइयों में से सुभाष को सबसे अधिक लगाव शरदचंद्र से था। नेताजी ने अपनी प्रारंभिक पढ़ाई कटक के रेवेंशॉव कॉलेजिएट स्कूल में हुई। तत्पश्चात् उनकी शिक्षा कलकत्ता के प्रेज़िडेंसी कॉलेज और स्कॉटिश चर्च कॉलेज से हुई, और बाद में भारतीय प्रशासनिक सेवा (इंडियन सिविल सर्विस) की तैयारी के लिए उनके माता-पिता ने बोस को इंग्लैंड के केंब्रिज विश्वविद्यालय भेज दिया। अंग्रेजी शासन काल में भारतीयों के लिए सिविल सर्विस में जाना बहुत कठिन था किंतु उन्होंने सिविल सर्विस की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया। 1921 में भारत में बढ़ती राजनीतिक गतिविधियों का समाचार पाकर बोस ने अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली और शीघ्र भारत लौट आए। सिविल सर्विस छोड़ने के बाद वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जुड़ गए। सुभाष चंद्र बोस महात्मा गांधी के अहिंसा के विचारों से सहमत नहीं थे। वास्तव में महात्मा गांधी उदार दल का नेतृत्व करते थे, वहीं सुभाष चंद्र बोस जोशीले क्रांतिकारी दल के प्रिय थे।

स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय

जन्म : 28 जनवरी
शत्-शत् नमन

लाला लाजपत राय भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने वाले मुख्य क्रांतिकारियों में से एक थे। वह पंजाब केसरी (पंजाब का शेर) के नाम से विख्यात थे और कांग्रेस के गरम दल के तीन प्रमुख नेताओं लाल-बाल-पाल (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चन्द्र पाल) में से एक थे। उन्होंने पंजाब नैशनल बैंक (पीएनबी) और लक्ष्मी बीमा कम्पनी की स्थापना भी की। लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 को दुधिके गॉव में हुआ था जो वर्तमान में पंजाब के मोगा जिले में स्थित है। वह मुंशी राधा किशन आज़ाद और गुलाब देवी के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनके पिता बनिया जाति के अग्रवाल थे। बचपन से ही उनकी माँ ने उनको उच्च नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी थी। लाला लाजपत राय ने बहुत से क्रांतिकारियों को प्रभावित किया और उनमें एक थे शहीद भगत सिंह। सन् 1928 में साइमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन के दौरान हुए लाठी-चार्ज में ये बुरी तरह से घायल हो गये और 17 नवम्बर सन् 1928 को परलोक सिधार गए।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

स्मृति : 30 जनवरी
शत्-शत् नमन

महात्मा गांधी एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे उन्होंने अपना पूरा जीवन भारत की आज़ादी के संघर्ष में बिताया। उनका जन्म एक हिन्दू परिवार में 2 अक्टूबर 1869 में गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। उन्होंने अपना पूरा जीवन भारतीय लोगों के एक नेता के रूप में व्यतीत किया। उनके पूरे जीवन की कहानी हमारे लिए एक महान प्रेरणा है। वे बापू या राष्ट्रपिता कहलाते है क्योंकि उन्होंने अपना सारा जीवन हमें आज़ादी दिलाने के लिए ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई लड़ने में बिता दिया। वे हमारे देश के असली पिता है क्योंकि ब्रिटिश शासन से हमें मुक्त कराने के लिए उन्होंने वास्तव में अपनी सारी शक्तियों का इस्तेमाल किया। वे 1947 में भारत की आज़ादी के बाद अपने जीवन को जारी नहीं रख सके क्योंकि 30 जनवरी 1948 को एक कार्यकर्ता नाथूराम गोडसे द्वारा उनकी हत्या कर दी गई। वह एक महान व्यक्तित्व थे उन्होंने मृत्यु तक अपना सारा जीवन अपनी मातृभूमि के लिए गुजार दिया। उन्होंने ब्रिटिश शासन से आजादी से हमारे जीवन को सच्चे प्रकाश से प्रबुद्ध कर दिया।

The Myth of the Aryan Invansion of India

By: David Frawley

ONE of the main ideas used to interpret and generally devalue-the ancient history of the India is the theory of the Aryan invasion. According to his account, India was invaded and conquered by nomadic light-skinned Indo-European tribes from Central Asia around 1500-100 BC, who overthrew an earlier and more advanced dark-skinned Dravidian civilization from which they took most of what later became Hindu culture. This so- called pre-Aryan civilization is said to be evidenced by the large urban ruins of what has been called the "Indus Valley culture" (as most of its initial sites were on the Indus river). The war between the power of light and darkness, a prevalent idea in the ancient Aryan Vedic scriptures, was thus interpreted to refer to this war between light and dark-skinned peoples. The Aryan invasion theory thus turned the Vedas, the original scriptures of ancient India and the Indo-Aryans, "into little more than primitives poems of uncivilized plunderers.

This idea-totally foreign to the history of India, whether north or south has become almost an unquestioned truth in the interpretation of ancient history. Today, after nearly all the reasons for its supposed validity have been refuted, even major Western scholars are at last beginning to call it into question. In this article we will summarize the main points that have arisen.

This is a complex subject that I have dealt with in depth in my book Gods, Sages and Kings: Vedic Light on Ancient Civilization, for those interested in a further examination of the subject. The Indus Valley culture was pronounced pre-Aryan for several reasons that were largely part of the cultural milieu of nineteenth century European thinking. As scholars following Max Muller had decided that the Aryans came into India around 1500 BC, since the Indus Valley culture was earlier than this, they concluded that it had to be pre-Aryan. Yet the rationale behind the last date for the Vedic culture given by Muller was totally speculative. Max Muller, like many of the christen scholars of era, believed in Biblical chronology. This placed the beginning of the world at 400 BC, and the flood around 2500 BC. Assuming those two dates, it became difficult to get the Aryans in India before 1500BC.

It was assumed by these scholars many of whom were also Christian missionaries unsympathetic was that of primitive nomads from Central Asia.

Muller therefore assumed that the five layers of the four Vedas and Upanishads were each composed in two hundred year periods before the Buddha at 500BC. However, there are more changes of language in Vedic Sanskrit itself than there are in classical Sanskrit since Panini, also regarded as a figure of around 500 BC, or a period of 2500 years. Hence it is clear that each of these periods could of centuries and that the two hundred year figure is totally arbitrary and is likely too short a figure.

It was assumed by these scholars many of whom were also Christian missionaries unsympathetic was that of primitive nomads from Central Asia. Hence they could not have founded any urban culture like that of the Indus Valley. The only basis for this was a rather questionable interpretation of the Rig Veda that they made, ignoring the sophisticated nature of the culture presented within it.

Meanwhile, it was also pointed out that in the middle of the second millennium BC, a number of Indi-European invasions apparently occurred in the East, wherein Indo-European peoples-the Hittites, Mittani and Kassites-conquered and ruled Mesopotamia for some centuries. An Aryan invasion of India would

have been another version of this same movement of Indo-European peoples. On top of this, excavators of the Indus Valley culture, like wheeler, thought they found evidence of destruction of the culture by an outside invasion conforming this.

The Vedic culture was thus said to be that of primitive nomads who came out of Central Asia with their horse- drawn chariots and iron weapons and overthrew the cities of the more advanced Indus Valley culture, with their superior battle tactics. It was pointed out that no horses, chariots iron were discovered in Indus Valley sites.

This was how the Aryan invasion theory formed and has remained since then. Though little has been discovered that confirms this theory, there has been much less to give it up.

Further excavations discovered horse not only in the Indus Valley sites but also in pre-Indus sites. The use of the horse has thus been proven for the whole range of ancient Indian history. Evidence of the wheel, and an Indus seal showing a spoked wheel as used in chariots, has also been found, suggesting the usage of chariots.

Moreover, the whole idea of nomads with chariots has been challenged. Chariots are not the vehicles of nomads. Their usage occurred only in ancient urban cultures with much flat land, of which the river plain of north India was the most suitable. Chariots are totally unsuitable for crossing mountains and deserts, as the so-called Aryan invasion required.

That the Vedic culture used iron- and must hence date later than introduction of iron around1500BC- revolves around the meaning of the Vedic term "ayas", interpreted as iron. Ayas in other Indo-European languages like Latin or German usually means copper, bronze or ore generally, not specially iron. There is no reason to insist that in such earlier Vedic times, ayas meant iron, particularly since other metals are not mentioned in the Rig Veda (except gold that is much more commonly referred to than ayas) Moreover, the Artharva Veda and Yajur Veda speak of different colours of ayas(such as red and black), showing that it was a generic term. Hence it is clear that ayas generally meant metal and not specifically iron.

Moreover, the enemies of the Vedic people in the Rig Veda also use ayas, even for making their cities, as do the Vedic people themselves. Hence there is nothing in Vedic literature to show that either the Vedic culture was an iron-based culture or that their enemies were not.

The Rig Veda describes its Gods as "destroyers of cities". This was used also to regard the Vedic as a primitive non-urban culture that destroys cities and urban civilization. However there are also many years verses in the Rig Veda that speaks of the Aryans as having cities of their own and being protected by cities up to a hundred in number. Aryan gods like Indra, Agni, Saraswati and the Adityas are praised as being like a city. Many ancient kings, included those of Egypt and Mesopotamia, had titles like a destroyer or conqueror of cities. This does not turn them into nomads. Destruction of cities also happens in modern wars; this does not make those who do this nomads. Hence the idea of the Vedic culture as destroying but not building cities is based upon ignoring what the Vedas actually say about their own cities.

Further excavation revealed that the Indus Valley culture was not destroyed by outside invasion, but according to internal causes and, most likely, floods. Most recently a new set of cities has been found in India (like the Dwaraka and Bet Dwaraka sites by S.R.Rao and Institute of Oceanography in India) which are intermediate between those of the Indus culture and later ancient India as visited by the Greeks. This may eliminate the so- called dark age following the presumed Aryan invasion and shows a continuous urban occupation in India back to the beginning of the Indus culture.The interpretation of the religion of the Indus Valley culture- made incidentally of Hinduism-was that its religion was different than the Vedic and more likely the later Shaivite religion.

(Rest on the next edition) OO

महर्षि दयानन्द और स्त्री शिक्षा

ओमकली सिंह, प्रधान
स्त्री आर्य समाज सीतापुर

किसी भी राष्ट्र को सशक्त बलवान, बुद्धिमान, चरित्रवान व संस्कारवान तलवार बंदूक, तोप या परमाणु बम नहीं बना सकते। तलवार संग्राम में विजय तो दिला सकती है परंतु आत्मबल नहीं दे सती, संस्कार नहीं दे सकती। यह कार्य तो केवल स्त्री ही कर सकती है। स्त्री भी शिक्षित स्त्री। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी भी समाज या राष्ट्र को संस्कारवान व सर्वगुण संपन्न बनाना है तो उस राष्ट्र की स्त्रियों को शिक्षित होना अनिवार्य है।

जिस राष्ट्र की स्त्रियां जितनी विदुषी होंगी वह राष्ट्र उतना ही संपन्न होगा। प्राचीन भारत में जब स्त्रियां पुरुषों के समान विद्या संपन्न हुआ करती थीं तब भारत सारी दुनिया का गुरु कहलाता था। गार्गी, मैत्रयी, अपाला, घोष, भारती आदि विदुषी महिलाओं के उदाहरण आज भी आदर्श है, जिनकी विद्वता के सामने बड़े-बड़े ऋषि भी नहीं टिक पाये। समय बदला, स्त्रियों को शिक्षा से वंचित कर दिया गया उन्हें केवल बच्चे पैदा करने तथा गृह कार्य करने तक सीमित कर दिया गया। वे मात्र पुरुषों के मनोरंजन का साधन बना दी गईं। उनके सामाजिक अधिकार समाप्त कर दिये गये। परिणाम सामने आया। राष्ट्र निर्बल हो गया, निर्बल ही नहीं हुआ गुलाम हो गया और लंबे समय तक गुलामी की यातना झेलता रहा शंकराचार्य जैसे धार्मिक विद्वानों ने भी स्त्रियों को वेद के पठन-पाठन के अधिकार से वंचित रखा तथा उन्हें नरक का द्वार तक कह डाला। तुलसीदास ने ढोल, गंवार, शूद्र, पशु और नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी कहकर नारी के सम्मान को बहुत बड़ा आघात पहुंचाया। सामान्य समाज में नारी को पैर की जूती के समान समझा जाने लगा। फिर समय बदला। ऋषि दयानन्द जैसे महान समाज सुधारक का उद्भव हुआ, उस समय नारी की दशा अत्यंत दयनीय एवं सोचनीय थी। स्त्रियों की इस स्थिति को देखकर दयानन्द को गहरा आघात लगा उन्होंने यह अनुभव किया कि स्त्री का उत्थान हुए बिना समाज अथवा राष्ट्र का उत्थान संभव नहीं है क्योंकि स्त्री भी पुरुषों की भांति समाजरूपी गाड़ी की एक पहिया है। स्वामी दयानन्द पहले समाज सुधारक हुए जिन्होंने नारी उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया है। ऋषि दयानन्द समाज सुधार के कार्यों में स्त्री को शिक्षित करने के लिए माता-पिता को प्रेरित किया है। इसके लिए उन्हें पुरुष समाज के कड़े विरोध का सामना भी करना पड़ा परंतु उन्होंने अकाट्य प्रमाणों और युक्तियों के आधार पर सिद्ध कर दिया कि स्त्री शिक्षा आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। स्त्रियों को चाहरदीवारी में बंद रहने के कारण तथा उनकी शिक्षा का कोई प्रबंध न होने के कारण वे लगातार अज्ञानता के अंधकार में डूबती जा रही थी जिससे समाज लगातार पतन की ओर बढ़ रहा था। गृहस्थ की दुर्दशा का कारण आज नारियों की अशिक्षा है। ज्ञान के अभाव में उनका न तो बौद्धिक विकास हो पाता है न नैतिक। इसका प्रभाव सम्पूर्ण गृहस्थी पर पड़ता है। पुरुष का संपूर्ण जीवन नारी पर आधारित रहता है। नारी पुरुष का निर्माण करती है। बालक की प्राथमिक पाठशाला प्राथमिक शिक्षक मां होती है। यदि मां का बौद्धिक स्तर ऊंचा नहीं है, उसके संस्कार ऊंचे नहीं हैं तो वह ब्रच्चों को ऊंचे संस्कार कैसे दे सकती है।

स्वामी दयानन्द का कहना है कि बिना शिक्षा के व्यक्ति अधूरा है। नारी भी जब तक शिक्षित नहीं होगी तब तक जागरूक नहीं हो सकती, वह अपने अस्तित्व को अपने महत्व को नहीं समझ सकती। अत: स्वामी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में वह सब अधिकार स्त्रियों को दिये जो पुरुषों के थे। वेद मंत्रों का प्रमाण देकर सिद्ध किया कि परमात्मा ने वेदों का प्रकाश मानव मात्र के लिए किया हैं तब स्त्रियों को वेद पठन-पाठन से वंचित क्यों

स्वामी दयानन्द का कहना है कि बिना शिक्षा के व्यक्ति अधूरा है। नारी भी जब तक शिक्षित नहीं होगी तब तक जागरूक नहीं हो सकती, वह अपने अस्तित्व को अपने महत्व को नहीं समझ सकती। अतः स्वामी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में वह सब अधिकार स्त्रियों को दिये जो पुरुषों के थे। वेद मंत्रों का प्रमाण देकर सिद्ध किया कि परमात्मा ने वेदों का प्रकाश मानव मात्र के लिए किया है तब स्त्रियों को वेद पठन-पाठन से वंचित क्यों किया गया? स्वामी जी ने सबके लिए शिक्षा की अनिवार्यता सिद्ध करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा 'इसमें राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रख सके, पाठशाला अवश्य भेज देवें जो न भेंजे वह दंडनीय हों।' स्त्रियों को सभी प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता पर बल देते हुए स्वामी जी लिखते हैं- 'जैसे पुरुषों को व्याकरण, धर्म और व्यवहार की विद्या न्यून न न्यून अवश्य पढ़नी चाहिए, वैसी स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिए।'

किया गया? स्वामी जी ने सबके लिए शिक्षा की अनिवार्यता सिद्ध करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा 'इसमें राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रख सके, पाठशाला अवश्य भेज देंवे, जो न भेंजे वह दंडनीय हों।'

स्त्रियों को सभी प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता पर बल देते हुए स्वामी जी लिखते हैं- 'जैसे पुरुषों को व्याकरण, धर्म और व्यवहार की विद्या न्यून न न्यून अवश्य पढ़नी चाहिए, वैसी स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्या तो अवश्य ही सीखनी चाहिए।' धर्म के संबंध में स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार होने चाहिए। उन्हें धर्म शास्त्रों का अध्ययन करने की पूरी आजादी होनी चाहिए। स्वामी जी ने बिना पत्नी के किसी भी धार्मिक अनुष्ठान को अधूरा माना है।

महिलाएं पुरुषों की भांति सभी धार्मिक कार्य करायें। स्वामी जी की ही देन है जो आज आर्य जगत में बहुत सी महिलाएं पौरोहित्य का कार्य करती देखी जा सकती हैं। यज्ञ आदि में स्त्रियों को ब्रह्मा के पद पर आसीन होने का अधिकार भी स्वामी जी ने उन्हें दिलवाया। ऋषि दयानन्द एक समाज सुधारक थे, जिन्होंने स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार दिलाने के लिए उनकी शिक्षा पर, धार्मिक समानता पर, पुनर्विवाह पर, पर्दा प्रथा समाप्त करने पर, सती प्रथा समाप्त करने पर, वैश्या वृत्ति समाप्त करने पर पूरा जोर लगाया तथा विवश होकर सरकार को कानून बनाकर इन सभी सुधारों को लागू करना पड़ा।

स्वामी जी की पैनी दृष्टि यहीं तक सीमित नहीं रही बल्कि नारी के उज्जवल भविष्य को ध्यान में रखते हुए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना के साथ-साथ लड़कियों की शिक्षा के लिए कन्या पाठशालाओं की भी व्यवस्था की तथा अपने अनुयायियों को भी उन्होंने इस कार्य को प्राथमिकता से करने का आदेश दिया। जिसका परिणाम आज यह है कि स्त्री समाज, पुरुषों से कहीं अधिक बुद्धिमत्ता, बहादुरी एवं श्रम का परिचय देते हुए तेजी से आगे बढ़ रही है। यदि दयानन्द न आते तो शायद यह संभव ही न होता। नारी जाति पर दयानन्द का यह उपकार हमेशा अविस्मरणीय रहेगा तथा यह जाति हमेशा उनकी ऋणी रहेगी। OO

प्रभु भक्ति का फल

जो सत्य भाव (सच्चे हृदय) से परमेश्वर की उपासना करते और यथाशक्ति उसकी आज्ञा का पालन करते और सर्वोपरि सत्कार के योग्य परमात्मा को मानते हैं उनको दयालु ईश्वर पापाचरण के मार्ग से पृथक कर धर्मयुक्त मार्ग में चला के विज्ञान (सत्यार्थ ज्ञान) देकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करने के लिए समर्थ कर देता है।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द गौरव गीत

चमकते सितारे जितने गगन में
शोभा शशी सम लिए थे ऋषिवर।
पर्वत की चोटी है जितनी धरा पर
हिमालय की समता किये थे ऋषिवर।।

घटना जो देखी मंदिर भवन में
शिव के विषय में सोचा था मन में।
हो नहीं सकता गत का नियन्ता
जो सक्षम नहीं है ये बोले ऋषिवर।।

माता-पिता धन घर बार छोड़ा
सत्य शिव शंकर से नाता जोड़ा।
अविद्या के प्रस्तर टूटे-ऋषि को
मिले मथुरा में विरजानन्द गुरुवर।।

वेद पढ़े सच्चा शिव पहचाना
निराकार निर्भय शक्तिमान जाना।
अनन्त अजन्मा अनुपम अनादि
अजर अमर अज भू सर्वेश्वर।।

दया से था पूर्ण दयानन्द का मन
विष देने वाले को किया धन अर्पण।
अमृत पिलाया जग को 'निरंजन'
पिये विष के प्याले स्वयं ऋषिवर।।

➲ निरंजन सिंह आर्य, भजनोपदेशक

पारसमणि था वो तो... ऋषि दयानन्द

दुनिया में सबसे न्यारा, सबसे जुदा दयानन्द।
हम आर्यों के दिल के अंदर बसा दयानन्द।।
अमृत पिलाया उसको, जिसने जहर पिलाया।
हमको बता कहां से, लाया दया दयानन्द।।
क्यों खाए जहर तूने, क्यों खाए ईंट पत्थर।
क्यों छोड़ा दुश्मनों को, हमको बता दयानन्द।।
इन उंगलियों को बेशक चाहे जला दे कोई।
छोड़ूंगा न कभी सच, तूने कहा दयानन्द।।
हमने कभी भी उसको, एक पल नहीं भुलाया।
अपने ख्याल में तो, रहता सदा दयानन्द।।
पारसमणि था वो तो, अब 'रूप' मान लो तुम।
वो बन गया है सोना, जिसने छुआ दयानन्द।।

➲ आचार्य संजीव रूप

बहुत ही गुणकारी है आंवला

आंवला में भरपूर मात्रा में एंटी ऑक्सीडेंट पाया जाता हैं और आंवले में पोटासियम, कार्बोहायड्रेट, फाइबर, प्रोटीन्स, विटामिन्स 'ए', 'बी' काम्प्लेक्स, मैग्नीशियम, विटामिन 'सी', आयरन, आंवला में विटामिन 'सी' भरपूर मात्रा में पाया जाता हैं। नारंगी से 20 प्रतिशत ज्यादा विटामिन 'सी' होता हैं और इसको गर्म करने पर भी इसकी विटामिन ख़त्म नहीं होते हैं।

आंखों से संबंधित बीमारी के लिए : आंवला का रस आंखों के लिए बहुत फायदेमंद हैं। आंवला आंखों की दृष्टी को या ज्योति को बढाता हैं। मोतियाबिंद में, कलर ब्लाइंडनेस, रतोंधी या कम दिखाई पड़ता हो तो भी आंवला का जूस फायदेमंद हैं। आखों के दर्द में भी काफी फायदा होता हैं।

पाचन क्रिया में मदद करता हैं : आवला भोजन को पचाने में बहुत मददगार साबित होता हैं खाने में अगर प्रतिदिन आवले की चटनी, मुरब्बा, अचार, रस, चूर्ण या चवनप्रास कैसे भी रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल करना चाहिए। इससे कब्ज की शिकायत दूर होती हैं पेट हल्का रहता हैं। रक्त की मात्रा में बढ़ोतरी होती हैं। खट्टे ढकार आना, गैस का बनाना, भोजन का न पचना, इत्यादि में आवला के 5 ग्राम पाउडर को पानी में भिगो कर सुबह शाम ले। अम्लीय पित्त के बुरे प्रभाव से छुटकारा मिलता हैं।

डायबिटिक के लिए : आवला में क्रोमियम तत्व पाया जाता हैं जो डायबिटिक के लिए उपयोगी होता हैं। आवला इंसुलिन होरमोंस को को सुदृढ़ करता हैं और खून में सुगर की मात्रा को नियंत्रित करता हैं। क्रोमियम बीटा ब्लॉकर के प्रभाव को कम करता हैं, जो की हृदय के लिए अच्छा होता हैं हृदय को स्वस्थ बनाता हैं। आवला खराब कोलेस्ट्रोल को ख़त्म कर अच्छे कोलेस्ट्रोल को बनाने में मदद करता हैं। आवला के रस में शहद मिलाकर लेने से डायबिटिक वालो को बहुत फायदा होता हैं।

हड्डियों के लिए उत्तम : आंवला के सेवन से हड्डियां मजबूत और ताकत मिलती हैं। इससे ओस्ट्रोपोरोसिस और आर्थराइटिस एवं जोड़ों के दर्द में भी आराम मिलता है।

तनाव से छुट्टी : तनाव में आराम मिलता हैं अच्छी नींद आती हैं। आवला के तेल को बालों के जड़ों में लगाया जाये तो कलर ब्लाइंडनेस से छुटकारा मिलता हैं। सर को ठंडा रखता है और राहत देता है।

संक्रमण से बचाव : आंवला में बक्टेरिया और फंगस से लड़ने की क्षमता होती हैं और ये बाहरी बीमारियों से भी हमें बचाती हैं। आंवला शरीर को पुष्ट कर उसे रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती हैं, और टोक्सिन को यानी विषाक्त प्रदार्थ को हमारे शरीर से निकलती देती हैं। अल्सर, अल्सरेटिव, कोलेटीस, पेट में संक्रमण जैसे विकार को ख़त्म करता हैं। रस प्रतिदिन लेने से बहुत फायदा होता हैं।

वजन कम करने में : आंवला के रस का सेवन करने से वजन कम करने में मदद मिलती है। आंवला हमारे मेटाबोलिज्म को तेज कर वजन कम करने में मदद करती हैं। आंवला के सेवन से भूख कम लगती हैं और काफी देर तक पेट भरा हुआ रहता है।

नकसीर के लिए : अगर किसी को नकसीर की तकलीफ हैं तो उन्हें आंवला का सेवन करना फायदेमंद होता है। ताज़ा रस 3,4 चम्मच का सेवन करना चाहिए या 1 ग्राम चूर्ण को 50 मिलिग्राम पानी के साथ लेना चाहिए। नाक से खून आने की आदत से आराम मिलता है।

हृदय की समस्या से उबारता है : आवला हमारे हृदय के मांसपेशियों के लिए उत्तम होता हैं। आंवला हमारे हृदय को स्वस्थ बनाने में कारगर है। हृदय की नालिकाओ में होने वाली रुकावट को ख़त्म करता हैं। खराब कलेस्ट्रोल को ख़त्म कर अच्छे कलेस्ट्रोल को बनाने में मदद करता है। आंवला में एंटी ऑक्सीडेंट तत्व प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जो शरीर में फ्री रेडिकल को बनाने ही नहीं देता। एंटी ऑक्सीडेंट के रूप

में एमिनो एसिड और पेक्टिन पाए जाते हैं, जो की कलेस्ट्रोल को नहीं बनाने देता हैं और हृदय की मांशपेशियों को मजबूती देता हैं। रस प्रतिदिन सेवन करना लाभप्रद हैं। इसे किसी भी रूप में आप ले सकते हैं।

उल्टी या वमन के लिए लाभकारी : आंवला का पाउडर और शहद सेवन करें या आवला के रस में मिश्री मिलकर सेवन करने से उल्टियों का आना बंद हो जाता हैं।

रोग प्रतिरोध : आंवले में एंटी ओक्सिडेंट होते हैं जो शरीर की रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और ये मौसम में होने वाले बदलाव के कारन होने वाले वाइरल संक्रमण से भी बचाता है।

आंवला के बारे में कितना भी कहा जाये बहुत कम ही हैं। 100 रोगों की एक दवा हैं, आंवला को दो तरीके से खाते हैं ताज़ा और सुखा आवला चूर्ण, दोनों ही रूप में आंवला उतना ही फायदेमंद हैं। आंवला बसंत के मौसम में फलते हैं। आंवला का उपयोग सदियों से चला आ रहा हैं। सदियों पहले चरक ऋषि ने इसकी महत्ता बताई थी, आंवले के उपयोग से हम हमेशा जवान और सुंदर व स्वस्थ शरीर वाले होते हैं। आंवला सभी रोगों का अचूक औषधि हैं। आयुर्वेद में आंवला के उपयोग की महत्ता हैं। आंवला का रसायन भी बाज़ार में मिलता हैं। बाज़ार में आंवला का पाउडर, चूर्ण, सुखाया हुआ, आंवला का रस सभी प्रकार का उपलब्ध हैं।

आर्यसमाज नोएडा का भव्य वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज, आर्षगुरुकुल एवं वानप्रस्थाश्रम बी-69, सेक्टर-33, नोएडा का भव्य वार्षिकोत्सव बुधवार 6 दिसम्बर से वैदिक यज्ञ के साथ आचार्य डा. जयेन्द्र कुमार जी के ब्रह्मत्व में श्री रविन्द्र सेठ-प्रधान आर्यसमाज नोएडा के निवास पर आरम्भ हुआ। यज्ञ में आर्यजगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री दिनेश आर्य 'पथिक' ने ईश्वर भक्ति के सुन्दर गीतों का श्रवण कराया। तदुपरान्त आचार्य जयेन्द्र जी ने अपने सुन्दर वक्तव्य द्वारा यज्ञ पर प्रकाश डाला उपस्थित सभी लोगों को आनन्द की अनुभूति कराई।

सांयकालीन सभा ऋग्वेदीय पारायण यज्ञ के साथ आरम्भ की गई। वेदपाठ आर्ष गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया जिसमें मुख्य यजमान माता सरला कालरा रहीं। ध्वजारोहण और दीप प्रज्जवलन श्री वीरेश भाटी-प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा गौतमबुद्धनगर के कर कमलों द्वारा किया गया। जिसमें दिनेश आर्य पथिक के गीत एवं आचार्य जयेन्द्र जी का प्रवचन 'पुनर्जन्म और ईश्वरीय न्याय व्यवस्था' पर हुआ। सांयकालीन भोजन की व्यवस्था श्री सतबीर आर्य व श्री सुखबीर आर्य सर्फाबाद द्वारा की गई।

7 दिसम्बर प्रात: यज्ञ श्री बिरेन्द्र बिश्नोई जी के निवास पर आचार्य जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें आचार्य जी द्वारा ईश्वर के विशेष गुणों की चर्चा की गई। सांयकालीन सभा ऋग्वेदीय पारायण यज्ञ के साथ आरम्भ की गई। तदोपरांत श्री दिनेश आर्य 'पथिक' जी के गीतों का आनन्द लेने के पश्चात आचार्य जी ने 'जीवन में सुख शान्ति का मार्ग' कैसे प्राप्त किया जा सकता है विषय पर विस्तार से चर्चा की जिससे सभी का मन प्रसन्न हुआ। कार्यक्रम के संयोजक कै. अशोक गुलाटी जी ने सभी का धन्यवाद करते हुए शांतिपाठ के साथ सभा का समापन किया। सांयकालीन भोजन की व्यवस्था श्रीमती डा. प्रियंका एवं डा. अनिरुद्ध सेतिया सेक्टर-20 द्वारा की गयी।

8 दिसम्बर प्रात: यज्ञ श्री अशोक मेहता जी के निवास पर आचार्य जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त श्री दिनेश आर्य ''पथिक'' जी ने प्रभु भक्ति के गीतों का श्रवण कराया एवं आचार्य जयेन्द्र जी ने ऋग्वेद के मंत्रों की व्याख्या की और जीवन को वेद मार्ग पर चलाने का संदेश दिया।

सांयकालीन सभा ऋग्वेदीय पारायण यज्ञ के साथ आरम्भ की गई। तत्पश्चात दिनेश आर्य पथिक जी ने अपने क्रांतिकारी गीतों से सभी को आनंदित किया। गुरुकुल के ब्रह्मचरियों ने भी देशभक्ति गीत सुनाये। संस्था के मंत्री कै. अशोक गुलाटी जी ने देशभक्ति कविता प्रस्तुत की मुख्य वक्ता स्वामी आर्यवेश (अध्यक्ष सार्वदेशिक प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा) ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में शहीदों को नमन किया और अपनी संतानों को संस्कारी बनाने और चरित्र की शिक्षा देने पर जोर देने को कहा। मुख्य अतिथि श्री सुधीर सिंघल एवं विशिष्ट अतिथि श्री सुधीर मिड्ढा जी ने अपने विचार व्यक्त कर आर्यसमाज व गुरुकुल के कार्यों की सराहना की। सांयकालीन भोजन व्यवस्था श्रीमती श्रुति माहेश्वरी सेक्टर-92, नोएडा द्वारा की गई। दिनांक 9-12-2017 को प्रात: यज्ञ श्री विजेन्द्र कठपालिया जी उपप्रधान आर्यसमाज नोएडा यज्ञ के यजमान बने। यज्ञ के अवसर पर आचार्य जी का प्रवचन एवं दिनेश पथिक जी के गीतों का श्रवण सभी ने किया। यज्ञ का प्रसाद श्री कठपालिया के सौजन्य से हुआ।

प्रथम सत्र- 9:30 बजे से 1:30 बजे तक महर्षि दयानन्द उपकार एवं भ्रष्टाचार उन्मूलन सम्मेलन ध्वजारोहण के साथ प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता स्वामी विश्वानंद जी ने की। कार्यक्रम में दिनेश आर्य पथिक जी ने ऋषि के उपकारों के गीत सुनाये तथा डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, आचार्य जयेन्द्र कुमार जी ने ऋषि के जीवन पर प्रकाश डाला। अंत में अध्यक्ष महोदय ने सभी का धन्यवाद किया तथा संयोजक कै. अशोक गुलाटी जी ने ऋषि का भावपूर्ण स्मरण कर सभा का शांतिपाठ के साथ समापन किया। प्रीतिभोज श्री शैलेन जगिया उपमंत्री आर्यसमाज नोएड़ा के सौजन्य से हुआ।

द्वितीय सत्र- आर्य महिला सम्मेलन श्रीमती डा. मंजू नारंग जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें मुख्य वक्ता श्रीमती प्रतिभा सिंघल जी ने 'वर्तमान राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में महिलाओं की भूमिका' विषय पर अपने विचारों के द्वारा नारी शक्ति के उपकारों को बताया। श्रीमती शकुंतला सेतिया द्वारा मार्गदर्शन दिया गया तथा श्रीमती मधु भसीन द्वारा भजन प्रस्तुत किया गया। अंत में महिला समाज की प्रधाना गायत्री मीना जी ने अपने वक्तव्य में नारी जाति के गौरव को बताया। कार्यक्रम का संयोजन व कुशल संचालन श्रीमती आदर्श बिश्नोई जी ने किया। कार्यक्रम के बाद 'प्रसाद वितरण' माता ओमवती गुप्ता उपप्रधान महिला समाज नोएडा के सौजन्य से हुआ।

तृतीय सत्र- सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री डा. डी.के. गर्ग चेयरमैन-ईशान शिक्षण संस्थान ने सत्यार्थ प्रकाश एवं आर्यसमाज के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये। मुख्य वक्ता स्वामी विश्वानन्द जी ने अपने सुन्दर विचारों द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के सच्चे अर्थ को बताया। कार्यक्रम का संयोजन करते हुये आचार्य जयेन्द्र जी ने ऋषि को कविता समर्पित करते हुये व सभी का धन्यवाद कर सत्र का समापन किया। रात्रिभोज श्री योगेश अरोड़ा सेक्टर-44, नोएडा के सौजन्य से किया गया। दिनांक 10-12-2017 प्रात: 8 बजे से 101 कुण्डीय 'विश्व शांति सौहार्द महायज्ञ' आचार्य डा. जयेन्द्र जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ व ऋत्विक श्रीमती गायत्री मीना रहीं। जिसमें वेदपाठ आर्ष गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारी नीरज और दीपक आर्य द्वारा किया गया।

यज्ञ के मनोरम दृश्य को देखकर नोएडावासी भारी संख्या

उमड़ पड़े और सभी वैदिक यज्ञ में आहुति प्रदान कर धर्म लाभ उठाया। यज्ञ व्यवस्था श्री मोहन प्रसाद उपाध्याय, श्री ओमकार शास्त्री, श्री विक्रम आर्य, श्री अमित द्विवेदी, श्री शिव कुमार शास्त्री, श्री नरेन्द्र शास्त्री आदि व गुरुकुल नोएडा के ब्रह्मचारियों ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। अन्त में यज्ञब्रह्मा जी द्वारा याज्ञिकों को प्रसाद प्रदान कर आशीर्वाद दिया गया इस अवसर पर चन्द्रा परिवार द्वारा वर्ष 2018 के कैलेंडर का वितरण किया गया। यज्ञ हेतु सहयोग श्री रोहन सिन्हा परधेवता माता लक्ष्मी सिन्हा वानप्रस्थाश्रम नोएडा के सौजन्य से की गई। यज्ञ प्रसाद श्रीमती श्री कुलवीर भसीन जी के सौजन्य से प्राप्त हुआ।

मुख्य समारोह प्रातः 9:30 बजे आरम्भ हुआ। जिसमें ठा. विक्रम सिंह-अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी, विधायक नोएडा प्रनिनिधि, स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री आनन्द चौहान, श्री वीरेश भाटी, डा. शशि प्रभा कुमार, आचार्य धर्मपाल आर्य, डॉ. अनिल आर्य, डा. वी.एस चौहान, श्री छत्रपति रंजीत राय आदि महानुभावों ने भाग लिया। मुख्य वक्ता डा. नरेन्द्र वेदालंकार, स्वामी विश्वानन्द, गायत्री मीना जी ने अपने विचार दिये। भजनोपदेशक दिनेश आर्य 'पथिक' जी ने गुरुकुल के संबंध में गीत सुनाये। इस अवसर पर पं. रामप्रसाद बिस्मिल व स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को याद किया गया।

कार्यक्रम के अवसर पर सम्मानित अतिथियों एवं विद्वानों द्वारा आर्यसमाज नोएडा की स्मारिका 'विश्ववारा संस्कृति' का विमोचन व वितरण किया गया जिसकी सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। ब्रह्मचारियों द्वारा चाणक्य चन्द्रगुप्त नाटक का मंचन किया गया तथा ब्रह्मचारी विशाल राणा द्वारा देशभक्ति कविता, ब्र.मानस द्वारा अंग्रेजी भाषण तथा ताराचन्द द्वारा ओजस्वी भाषण एवं ब्रह्मचारियों द्वारा शारीरिक प्रदर्शन दिखाये गये। इससे प्रसन्न होकर संस्था के संरक्षक श्री आनन्द चौहान-निदेशक अमीटी शिक्षण संस्थान द्वारा ब्र. को प्रोत्साहन प्रदान किये गये। गुरुकुल के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को माता नारायणी देवी पुरस्कार, श्री वीरप्रताप अरोड़ा द्वारा प्रदान किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य डा. जयेन्द्र कुमार जी की मंत्री जी द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई व संस्था के अधिकारियों द्वारा सम्मानित किया गया। इसी के साथ श्रीमती गायत्री मीना, श्रीमती आदर्श बिश्नोई, श्रीमती संतोष लाल को इनके द्वारा किये सहयोग के लिये सम्मानित किया गया। भिन्न-भिन्न समाजों से पधारे अधिकारियों और माहनुभावों को स्मृति चिन्ह देकर आर्यसमाज नोएडा के प्रधान एवं मंत्री जी द्वारा सभी को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संयोजन कर आचार्य जी ने सभी का धन्यवाद करते हुये शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया।

कार्यक्रम में सर्वश्री रविशंकर अग्रवाल, श्री नरेन्द्र सूद, परेश गुप्त, राज सरदाना, सरला कालरा, वृंदा सग्गी, लक्ष्मी सिन्हा, कमलेश भाटिया, सरला जुनेजा, मधु भसीन, अन्नपूर्णा धवन, रमेश चन्द्र, जितेन्द्र आर्य, कविता आर्य, सतेन्द्र आर्य, पूर्णप्रकाश गोयल, राकेश कुमार, नीरज कुमार, दीपक कुमार, घनानन्द, सुभाष, प्रमोद व अनेक संन्यासी वृंद, सेक्टर-33 के निवासी व उपस्थित सभी आर्यजनों ने कार्यक्रम को सराहा।

सभी महानुभावों ने ऋषि भोज (श्रीमती एवं श्री अशोक अरोड़ा जी के सौजन्य) से प्राप्त कर आर्यसमाज, आर्षगुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के भव्य वार्षिकोत्सव की भविष्य के लिए यादें लेकर अपने-अपने घरों को लौटे।

■ **संपादक मंडल, विश्ववारा संस्कृति**

'विश्ववारा संस्कृति' के नियम व सविनय निवेदन

1. यदि 'विश्ववारा संस्कृति' दिनांक 15 तक नहीं पहुंचती है तो आप प्रधान संपादक के नाम पत्र डालें। पत्र मिलते ही 'विश्ववारा संस्कृति' पुनः भेज दी जायेगी।
2. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा के नाम भेजें। वीपी, रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जायेगा।
3. लेख संपादक 'विश्ववारा संस्कृति' के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त होने चाहिए तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुंदर लेख कागज के एक ओर लिखे होने चाहिए।
4. 'विश्ववारा संस्कृति' में विज्ञापन भी दिये जाते हैं, परंतु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जायेगा।
5. यह 'विश्ववारा संस्कृति' पत्रिका समाज-सुधार की दृष्टि से मानव कल्याणार्थ निकाली जाती है। इसमें आपको धर्म, यज्ञ कर्म, समाज सुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, स्वास्थ्य, योगासन, सदाचार, संस्कार, नैतिकता, वैदिक विचार, शिक्षा आदि एवं अन्य ऐसे विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
6. 'विश्ववारा संस्कृति' के दस ग्राहक बनाने वाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क 'विश्ववारा संस्कृति' भेजी जायेगी तथा पचास ग्राहक बनाने वाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क पत्रिका भेजी जायेगी तथा उसका फोटो सहित जीवन-परिचय 'विश्ववारा संस्कृति' में निकाला जायेगा।
7. अन्य पत्र-पत्रिकाओं में पहले छपा हुआ लेख 'विश्ववारा संस्कृति' में नहीं छापा जायेगा। अनाधिकृत रूप से लिए लेख, रचना, कविता के लिए प्रेषक ही उत्तरदायी होंगे।

आर्य कै. अशोक गुलाटी, प्रबंध संपादक
'विश्ववारा संस्कृति'
आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, उप्र
संपर्क सूत्र : 0120-2505731, 4206693, 9871798221, 9555779571
ई-मेल : info.aryasamajnoida33@gmail.com

समाचार - सूचनाएं

- 6 से 10 दिसम्बर 2017 को आर्य समाज नोएडा, आर्षगुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा का भव्य वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। (विवरण पृष्ठ संख्या : 21-22)

- विश्व वेद सम्मेलन का भव्य आयोजन इंदिरा गांधी सांस्कृतिक सेंटर दिल्ली में 15 से 17 दिसम्बर को स्वामी अग्निवेश जी की अध्यक्षता में डा. आनंद कुमार आईपीएस, डा. धर्मेन्द्र शास्त्री के संयोजन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें भिन्न-भिन्न सत्रों में भिन्न-भिन्न विषयों पर विद्वानों व शोध विद्यार्थियों द्वारा शोध पत्र पढ़े गए। जिसे समस्त महानुभावों ने सराहा व इस सम्मेलन को हर वर्ष आयोजित करने के लिए प्रस्ताव पारित हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन माननीय उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू द्वारा किया गया, कार्यक्रम सफल रहा।

- गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला झाल, टीकरी, मेरठ का वार्षिकोत्सव 13-14 जनवरी 2018 अखिल भारतीय गोष्ठी 'उपनिषदों में विविध विधाएं' स्वामी समर्पणानन्द जी की 49वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित किया जाएगा।

- केंद्रीय आर्षयुवक परिषद के तत्वावधान में 26, 27, 28 जनवरी 2018 को 39वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन रामलीला मैदान अशोक विहार फेस-1 में किया जा रहा है।

- 19वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक सम्मेलन 4-2-18 को आर्य समाज, बी ब्लॉक जनकपुरी में आयोजन किया जा रहा है।

- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा स्वाध्याय व प्रेरणा शिविर 9 दिन का 20 से 28 मार्च 2018 को केरला में आयोजन किया जा रहा है। मात्र 17500/- हवाई यात्रा द्वारा सम्पर्क सूत्र :-
शिव कुमार मदान- 931047979.

सूचना : जनवरी मास में जिन माननीय सदस्यों का वार्षिक शुल्क समाप्त होने जा रहा है उनसे सविनय अनुरोध है कि अपना वार्षिक शुल्क 250/-रुपया आर्य समाज, बी-69 सेक्टर-33, नोएडा (उप्र), को भिजवाने की कृपा करें ताकि उनकी पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' निरंतर प्रेषित की जाती रहे।

■ प्रबंध संपादक : 9871798221

विश्ववारा संस्कृति

- सभी धार्मिक सामाजिक पत्रों की अपेक्षा अधिक संख्या में प्रकाशित होने वाली पत्रिका।
- वर्ष में 12 अंक प्राप्त करें।
- 'विश्ववारा संस्कृति' का वार्षिक सदस्यता शुल्क 250 रुपया है। और आजीवन सदस्यता शुल्क 2500 रुपया है।
- 'विश्ववारा संस्कृति' का विदेश में वार्षिक सदस्यता शुल्क 3100 रुपया है।
- लेखक अपने विचार, लेख, कविता आदि प्रकाशन सामग्री प्रत्येक मास की 2-4 तारीख तक भेज दिया करें।
- जिस मास से शुल्क भेजेंगे तभी से सदस्यता प्रारम्भ होगी।
- नमूना कॉपी के लिए रु. 20 का धन-आदेश द्वारा अग्रिम भेजें।
- प्रत्येक पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिखें और उत्तर चाहने वाले व्यक्ति दोहरा कार्ड या टिकट भेजें।
- प्रत्येक पत्र-व्यवहार में अपना पता भी हिन्दी में साफ-साफ लिखा करें।
- आपके सुझाव अपेक्षित हैं।

■ **प्रबंध संपादक**

'विश्ववारा संस्कृति' : सदस्यता आवेदन पत्र

नाम : ....

आयु : .... दिनांक : ....

पता : ....

....

शहर : .... राज्य : .... पिन कोड : ....

फोन : .... मोबाइल : .... ई-मेल ....

नगद/चैक/मनी आर्डर/डीडी संख्या : ....

संरक्षक/आजीवन/पंच वर्षीय/वार्षिक सदस्यता हेतु संलग्न है।

चैक-मनी आर्डर 'आर्य समाज' नोएडा के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया' नोएडा, सेक्टर-33 में खाता संख्या : 1483010100182, IFSC-UTB10SCN560 में जमा कराकर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें-

प्रबंध संपादक

'विश्ववारा संस्कृति'

आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, (उप्र)

संपर्क सूत्र : 0120-2505731, 9871798221, 9555779591

ई-मेल : info.aryasamajnoida33@gmail.com

आर्य समाज द्वारा विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों, सहयोगियों व महानुभावों के सम्मान का दृश्य

भव्य वार्षिकोत्सव के अवसर पर मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, संन्यासीगण एवं विद्वत्गण

विशिष्ट महानुभावों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारम्भ

अमेटी शिक्षण संस्थान के निदेशक आनंद चौहान जी का सम्मान

आर्य समाज नोएडा की स्मारिका- 2017 'विश्ववारा संस्कृति' का महान हस्तियों द्वारा विमोचन का भव्य दृश्य

विश्ववारा संस्कृति

आर्य समाज, बी-69, सैक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 4206693